उहुद की लड़ाई

बदले की लड़ाई के लिए क़ुरैश की तैयारियां

मक्का वालों को बद्र की लड़ाई में जो पसपाई और अपने बड़ों के क़त्ल का जो दुख सहन करना पड़ा था, उसकी वजह से वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़म और गुस्से से खौल रह थे, यहां तक कि उन्होंने अपने मरने वालों पर आह-वाह करने से भी रोक दिया था और क़ैदियों के फ़िदए की अदाएगी में भी जल्दबाज़ी दिखाने से मना कर दिया था, ताकि मुसलमान उनके रंज और ग़म की ज़्यादती का अन्दाज़ा न कर सकें।

फिर उन्होंने बद्र की लड़ाई के बाद सर्वसम्मति से यह फ़ैसला किया कि मुसलमानों से भरपूर लड़ाई लड़कर अपना कलेजा ठंडा करें और अपने भड़के गुस्से को तस्कीन दें और इसके साथ ही इस क़िस्म की लड़ाई की तैयारी भी शुरू कर दी। इस मामले में क़ुरैश के सरदारों में से इक्रिमा बिन अबू जह्ल, सफ़वान बिन उमैया, अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और अब्दुल्लाह बिन रबीआ ज़्यादा जोश में और सबसे आगे-आगे थे।

इन लोगों ने इस सिलसिले में पहला काम यह किया कि अबू सुफ़ियान का वह क़ाफ़िला जो बद्र की लड़ाई की वजह बना था और जिसे अबू सुफ़ियान बचा कर निकाल ले जाने में कामियाब हो गया था, उसका सारा माल जंगी ख़र्चों के लिए रोक लिया और जिन लोगों का माल था, उनसे कहा कि—

'ऐ क़ुरैश के लोगो ! तुम्हें मुहम्मद ने कड़ा झटका दिया है और तुम्हारे चुने हुए सरदारों को क़त्ल कर डाला है, इसलिए उनसे लंड़ने के लिए इस माल के ज़रिए मदद करो, मुम्किन है कि हम बदला चुका लें।'

क़ुरैश के लोगों ने उसे मंज़ूर कर लिया। चुनांचे यह सारा माल जिसका योग एक हज़ार ऊंट और पचास हज़ार दीनार था, लड़ाई की तैयारी के लिए बेच डाला गया। इसी के बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी है—

'जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे अपने माल अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए ख़र्च करेंगे, तो ये ख़र्च तो करेंगे, लेकिन फिर यह उनके लिए हैरानी की वजह होगा, फिर मग़लूब किए जाएंगे।' (8 : 36)

फिर उन्होंने स्वयं सेवा के रूप में जंगी ख़िदमत का दरवाज़ा खोल दिया कि जो अहाबीश किनाना और तिहामा के लोग लड़ाई में शरीक होना चाहें, वे क़ुरैश के झंडे तले जमा हो जाएं। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए लोभ-लालच दिलाने की

बहुत-सी शक्लें भी अपनाई, यहां तक कि अबू उज़्ज़ा नामी कवि, जो बद्र की लड़ाई में क़ैद हुआ था, और जिससे अल्लाह के रसूल ने यह वचन लेकर कि वह अब आपके ख़िलाफ़ कभी नहीं उठेगा, एहसान के तौर पर बिला फ़िदया छोड़ दिया था, उसे सफ़वान बिन उमैया ने उभारा कि वह क़बीलों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभारने का काम करे और उससे यह वचन लिया कि अगर वह लड़ाई से बचकर ज़िंदा व सलामत वापस आ गया, तो उसे मालामाल कर देगा, वरना उसकी लड़कियों को पाले-पोसेगा।

चुनांचे अबू उज़्ज़ा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिए वचन को पीठ पीछे डालकर भावनाओं को उभारने वाली कविताओं द्वारा क़बीलों को भड़काना शुरू कर दिया। इसी तरह क़ुरैश के एक और कवि मुसाफ़े बिन अब्दे मुनाफ़ जुमही को इस मुहिम के लिए तैयार किया।

इधर अबू सुफ़ियान ने ग़ज़वा सवीक़ से नाकाम व नामुराद, बल्कि रसद के सामान की एक बहुत बड़ी मात्रा से हाथ धोकर वापस आने के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ लोगों को उभारने और भड़काने में कुछ ज़्यादा ही सरगर्मी दिखाई।

फिर आख़िर में सरीया ज़ैद बिन हारिसा की घटना से क़ुरैश को जिस संगीन और आर्थिक रूप से कमर तोड़ घाटे से दोचार होना पड़ा और उन्हें जितना ज़्यादा दुख और ग़म पहुंचा, उसने आग पर तेल का काम किया और इसके बाद मुसलमानों से एक निर्णायक लड़ाई लड़ने के लिए क़ुरैश की तैयारी की रफ़्तार में बड़ी तेज़ी आ गई।

क़ुरैश की फ़ौज, लड़ाई का सामान और कमान

चुनांचे साल पूरा होते-होते क़ुरैश की तैयारी पूरी हो गई। उनके अपने लोगों के अलावा उनके साथी और मित्र क़बीलों को मिलाकर कुल तीन हज़ार की फ़ौज तैयार हुई।

क़ुरैशी सरदारों की राय हुई कि अपने साथ औरतें भी ले चलें, ताकि उनकी इज़्ज़त व आबरू को बचाए रखने का एहसास कुछ ज़्यादा ही वीरता के साथ लड़ने की वजह बने। इसलिए इस फ़ौज में कुछ औरतें भी शामिल हुईं, जिनकी तायदाद पन्द्रह थी। सवारी के लिए और माल ढोने के लिए तीन हज़ार ऊंट थे और फ़ौज के लिए दो सौ घोड़े।[1]

---

1. ज़ादुल मआद, 2/92, यही मशहूर है, लेकिन फ़त्हुल बारी 7/346 में घोड़ों की तायदाद एक सौ बताई गई है।

इन घोड़ों को ताज़ादम रखने के लिए इन्हें पूरे रास्ते वाज़ू में ले जाया गया यानी इन पर सवारी नहीं की गई। सुरक्षा-शस्त्रों में सात सौ कवच थे।

अबू सुफ़ियान को पूरी फ़ौज का सेनापति मुक़र्रर कर दिया गया। फ़ौज की कमान ख़ालिद बिन वलीद को दी गई और इक्रिमा बिन अबू जह्ल को उनका सहयोगी बनाया गया। झंडा तैशुदा क़ायदे के मुताबिक़ क़बीला बनी अब्दुद्दार के हाथ में दिया गया।

मक्के की फ़ौज चल पड़ी

इस भरपूर तैयारी के बाद मक्के की फ़ौज ने इस हालत में मदीने का रुख़ किया कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़म व ग़ुस्सा और बदले की भावना उनके दिलों में शोला बनकर भड़क रही थी। इससे अन्दाज़ा हो रहा था कि आने वाली लड़ाई में कितनी ख़ूंरेज़ी और तेज़ी पैदा होने वाली है।

मदीना में सूचना

हज़रत अब्बास रज़ि० क़ुरैश की इन सारी चलत-फिरत, सरगर्मियों और जंगी तैयारियों का बड़ी मुस्तैदी और गहराई से अध्ययन कर रहे थे। चुनांचे जैसे ही यह फ़ौज हरकत में आई, हज़रत अब्बास रज़ि० ने एक ख़त के ज़रिए उसका पूरा विवरण नबी सल्ल० की ख़िदमत में भेज दिया।

हज़रत अब्बास रज़ि० का दूत सन्देश पहुंचाने में बड़ा फुर्तीला साबित हुआ। उसने मक्का से मदीना तक कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी सिर्फ़ तीन दिन में तै करके उनका पत्र नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले किया। उस वक़्त आप मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ रखते थे।

यह पत्र हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्ल० को पढ़कर सुनाया। आपने उन्हें राज़दारी बरतने की ताकीद की और झट मदीना तशरीफ़ लाकर अंसार और मुहाजिरों के सरदारों से सलाह व मश्विरा किया।

आपातकालीन स्थिति के मुक़ाबले की तैयारी

इसके बाद मदीना में आम लामबन्दी की स्थिति पैदा हो गई। लोग किसी भी स्थिति से निपटने के लिए हर वक़्त हथियार बन्द रहने लगे, यहां तक कि नमाज़ में भी हथियार अलग नहीं किया जाता था।

उधर अंसार की एक छोटी-सी टुकड़ी, जिसमें साद बिन मुआज़, उसैद बिन हुज़ैर और साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुम थे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की निगरानी पर तैनात हो गई। ये लोग हथियार पहनकर सारी रात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर गुज़ार देते थे।

कुछ और टुकड़ियां इस ख़तरे को देखते हुए कि ग़फ़लत में अचानक कोई हमला न हो जाए, मदीने में दाख़िले के अलग-अलग रास्तों पर तैनात हो गईं।

कुछ दूसरी टुकड़ियों ने दुश्मन की गतिविधियों का पता लगाने के लिए जासूसी का काम शुरू कर दिया। ये टुकड़ियां उन रास्तों पर गश्त करती रहती थीं, जिनसे गुज़रकर मदीने पर छापा मारा जा सकता था।

मक्का की फ़ौज, मदीने की तलैटी में

उधर मक्के की फ़ौज, जाने-पहचाने राजमार्ग पर चलती रही। जब अबवा पहुंची, तो अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा ने यह प्रस्ताव रखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मां की क़ब्र उखाड़ दी जाए।

लेकिन इस दरवाज़े को खोलने के जो संगीन नतीजे निकल सकते थे, उसके डर से सरदारों ने यह प्रस्ताव मंज़ूर नहीं किया।

इसके बाद फ़ौज ने अपना सफ़र पहले की तरह जारी रखा, यहां तक कि मदीना के क़रीब पहुंचकर पहले अक़ीक़ की घाटी से गुज़री, फिर किसी क़दर दाहिनी ओर कतरा कर उहुद पहाड़ी के क़रीब ऐनैन नाम की एक जगह पर, जो मदीना के उत्तर में क़नात घाटी के किनारे एक ऊसर ज़मीन है, पड़ाव डाल दिया। यह शुक्रवार 06 शव्वाल सन् 03 हि० की घटना है।

मदीना की रक्षात्मक रणनीति के लिए मज्लिसे शूरा (सलाहकार समिति) की मीटिंग

मदीना के सूचना-सूत्र मक्की सेना की एक-एक ख़बर पहुंचा रहे थे, यहां तक कि उसके पड़ाव के बारे में आख़िरी ख़बर भी पहुंचा दी। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौजी हाई कमान की मज्लिसे शूरा की मीटिंग बुलाई, जिसमें यथोचित रणनीति अपनाने के लिए सलाह-मश्विरा करना था।

आपने उन्हें अपना देखा हुआ एक सपना बतलाया। आपने क़सम खाकर बताया कि मैंने एक भली चीज़ देखी। मैंने देखा कि कुछ गाएं ज़िब्ह की जा रही हैं और मैंने देखा कि मेरी तलवार के सिरे पर कुछ टूट-फूट है और यह भी देखा कि मैंने अपना हाथ एक सुरक्षित कवच में डाल रखा है।

फिर आपने गाय का यह स्वप्नफल बताया कि कुछ सहाबा क़त्ल किए

जाएंगे। तलवार में टूट-फूट का यह स्वप्नफल बताया कि आपके घर का कोई आदमी शहीद होगा और सुरक्षित कवच का यह स्वप्नफल बताया कि इससे मुराद मदीना शहर है।

फिर आपने सहाबा किराम के सामने रक्षात्मक रणनीति के बारे में अपनी राय पेश की कि मदीने से बाहर न निकलें, बल्कि शहर के अन्दर ही क़िलाबन्द हो जाएं। अब अगर मुश्रिक अपने कैम्प में ठहरे रहते हैं, तो बे-मक़्सद और बुरा ठहरना होगा और अगर मदीने में दाख़िल होते हैं, तो मुसलमान गली-कूचों के नाकों पर उनसे लड़ेंगे और औरतें छतों के ऊपर से उन पर ईंट-पत्थर बरसाएंगी।

यही सही राय थी और इसी राय से अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़ों के सरदार) ने भी सहमति दिखाई, जो इस मीटिंग में ख़जरज के एक बड़े नुमाइन्दे की हैसियत से शरीक था। लेकिन उसकी सहमति का आधार यह न था कि सामरिक दृष्टिकोण से यह बात सही थी, बल्कि उसका मक़्सद यह था कि वह लड़ाई से दूर भी रहे और किसी को इसका एहसास भी न हो।

लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मंजूर था। उसने यह चाहा कि यह व्यक्ति अपने साथियों सहित पहली बार भरे बाज़ार में रुसवा हो जाए और उनके कुफ़्र व निफ़ाक़ पर जो परदा पड़ा हुआ है, वह हट जाए और मुसलमानों को अपनी सबसे कठिन घड़ी में मालूम हो जाए कि उनकी आस्तीन में कितने सांप पल रहे हैं।

चुनांचे मान्य सहाबा की एक जमाअत ने, जो बद्र में शरीक होने से रह गई थी, बढ़कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मश्विरा दिया कि मैदान में तशरीफ़ ले चलें और उन्होंने अपनी इस राय पर बड़ा आग्रह किया, यहां तक कि कुछ सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम तो इस दिन की तमन्ना किया करते थे और अल्लाह से इसकी दुआएं मांगा करते थे। अब अल्लाह ने इसका मौक़ा दिया है और मैदान में निकलने का वक़्त आ गया है, तो फिर आप दुश्मन के मुक़ाबले ही के लिए तशरीफ़ ले चलें। वे यह न समझें कि हम डर गए हैं।

इन अति उत्साही लोगों में खुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे आगे थे, जो बद्र की लड़ाई में अपनी तलवार का जौहर दिखा चुके थे। उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि उस ज़ात की क़सम ! जिसने आप पर किताब उतारी, मैं कोई खाना न खाऊंगा, यहां तक कि मदीने से बाहर अपनी तलवार के लिए उनसे दो-दो हाथ न कर लूं।[1]

1. सीरते तैयिबा 2/14

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन गर्मजोश लोगों के आग्रह पर अपनी राय छोड़ दी और आख़िरी फ़ैसला यही हुआ कि मदीने से बाहर निकलकर खुले मैदान में लड़ाई लड़ी जाए।

इस्लामी फ़ौज की तर्तीब और लड़ाई के मैदान के लिए रवानगी

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुमा की नमाज़ पढ़ाई तो वाज़ व नसीहत (उपदेश) की, जद्दोजेहद पर उभारा और बतलाया कि सब्र और जमाव से ही ग़लबा मिल सकता है। साथ ही हुक्म दिया कि दुश्मन से मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाएं।

यह सुनकर लोगों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई।

इसके बाद जब आपने अस्र की नमाज़ पढ़ी, तो उस वक़्त तक लोग जमा हो चुके थे। अवाली के लोग भी आ चुके थे। नमाज़ के बाद आप अन्दर तशरीफ़ ले गए। साथ ही अबूबक्र व उमर भी थे। उन्होंने आपके सर पर अमामा बांधा और कपड़े पहनाए। आपने नीचे-ऊपर दो कवच पहने, तलवार लटकाई और हथियार से सज कर लोगों के सामने तशरीफ़ लाए।

लोग आपके आने के इन्तिज़ार में थे ही। लेकिन इस बीच हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और उसैद बिन हुज़ैर ने लोगों से कहा कि आप लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैदान में निकलने पर ज़बरदस्ती तैयार किया है, इसलिए मामला आप ही के हवाले कर दीजिए।

ऐसा सुनकर सबने शर्मिंदगी महसूस की और जब आप बाहर तशरीफ़ ले आए तो आपसे अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें आपसे मतभेद नहीं करना चाहिए था, आपको जो पसन्द हो वही कीजिए। अगर आपको यह पसन्द है कि मदीने में रहें तो आप ऐसा ही कीजिए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कोई नबी जब अपना हथियार पहन ले, तो मुनासिब नहीं कि उसे उतारे, यहां तक कि अल्लाह उसके दर्मियान और उसके दुश्मन के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दे।[1]

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौज को तीन हिस्सों में बांट दिया—

1. मुहाजिरों का दस्ता, इसका झंडा हज़रत मुसअब बिन उमैर अब्दरी

---

1. मुस्नद अहमद, नसई 3/351, हाकिम, इब्ने इस्हाक़, बुख़ारी ने भी इसे किताबुल एतसाम बाब 28 तर्जमतुल बाब में ज़िक्र किया है।

रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

2. औस क़बीले (अंसार) का दस्ता, इसका झंडा हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

3. ख़ज़रज क़बीले (अंसार) का दस्ता, इसका झंडा हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

पूरी फ़ौज में कुल एक हज़ार लड़ने वाले योद्धा थे, जिनमें एक सौ कवचधारी थे और कहा जाता है कि घुड़सवार कोई भी न था।[1]

हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को इस काम पर मुक़र्रर फ़रमाया कि वह मदीने के अन्दर रह जाने वालों को नमाज़ पढ़ाएंगे।

इसके बाद कूच करने का एलान फ़रमा दिया और फ़ौज उत्तर की ओर चल पड़ी। हज़रत साद बिन मुआज़ और साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा कवच पहने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे-आगे चल रहे थे।

सनीयतुल वदाअ से आगे बढ़े तो एक दस्ता नज़र आया, जो बहुत अच्छे हथियार पहने हुए था और पूरी फ़ौज से अलग-थलग था।

आपने मालूम किया तो बतलाया गया कि ख़ज़रज के मित्र यहूदी हैं,[२] जो मुश्रिकों के ख़िलाफ़ लड़ाई में शरीक होना चाहते हैं।

आपने मालूम किया, क्या ये मुसलमान हो चुके हैं?

लोगों ने कहा, नहीं।

इस पर आपने शिर्क वालों के ख़िलाफ़ कुफ़्र वालों की मदद लेने से इंकार कर दिया।

फ़ौज का मुआयना

फिर आपने शेख़ान नाम की एक जगह पर पहुंचकर फ़ौज का मुआयना

---

1. इब्ने क़य्यिम ने ज़ादुल मआद 2/92 में कहा है कि पचास सवार थे। हाफ़िज़ इब्ने हजर कहते हैं कि यह भारी ग़लती है। मूसा बिन अक़बा ने पूरे विश्वास से कहा है कि मुसलमानों के साथ उहुद की लड़ाई में सिरे से कोई घोड़ा था ही नहीं। वाक़दी का बयान है कि सिर्फ़ दो घोड़े थे। एक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास और एक अबू बुरदा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास।(फ़त्हुल बारी 7/350)
2. इस घटना का उल्लेख इब्ने साद ने किया है। इसमें यह भी बताया गया है कि यह बनू क़ैनुक़ाअ के यहूदी थे (2/34) लेकिन यह सही नहीं है, क्योंकि बनू क़ैनुक़ाअ को बद्र की लड़ाई के कुछ ही दिनों बाद घर से बे-घर कर दिया गया था।

फ़रमाया। जो लोग छोटे या लड़ने के क़ाबिल नज़र आए, उन्हें वापस कर दिया। उनके नाम ये हैं—

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, 2. उसामा बिन ज़ैद, 3. उसैद बिन ज़ुहैर, 4. ज़ैद बिन साबित, 5. ज़ैद बिन अरक़म, 6. उराबा बिन औस, 7. अम्र बिन हज़्म, 8. अबू सईद खुदरी, 9. ज़ैद बिन हारिसा और 10. साद बिन हुब्बा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हुम। इस सूची में बरा बिन आज़िब का नाम भी लिया जाता है, लेकिन सहीह बुख़ारी में उनकी जो रिवायत उल्लिखित है, उससे स्पष्ट होता है कि वह उहुद के मौक़े पर लड़ाई में शरीक थे।

अलबत्ता कम उम्र होने के बावजूद हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज और समुरा बिन जुन्दुब को लड़ाई में शरीक होने की इजाज़त मिल गई। इसकी वजह यह हुई कि हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज बड़े माहिर तीरंदाज़ थे, इसलिए उन्हें इजाज़त मिल गई।

जब उन्हें इजाज़त मिल गई तो हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं तो राफ़ेअ से ज़्यादा ताक़तवर हूं। मैं उसे पछाड़ सकता हूं।

चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी ख़बर दी गई तो आपने अपने सामने दोनों से कुश्ती लड़वाई और सचमुच समुरा ने राफ़ेअ को पछाड़ दिया। इसलिए उन्हें भी इजाज़त मिल गई।

उहुद और मदीने के दर्मियान रात बिताई

यहीं शाम हो चुकी थी, इसलिए आपने यहीं मग़रिब और फिर इशा की नमाज़ पढ़ी, और यहीं रात भी गुज़ारने का फ़ैसला किया।

पहरे के लिए पचास सहाबा चुने गए जो कैम्प के चारों ओर गश्त लगाते जाते थे। इनके नेता मुहम्मद बिन मस्लमा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु थे। यह वही बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने काब बिन अशरफ़ को ठिकाने लगाने वाली टीम का नेतृत्व किया था।

ज़क्वान बिन अब्दुल्लाह बिन क़ैस खास नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहरा दे रहे थे।

अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों की सरकशी

सुबह होने से कुछ पहले आप फिर चल पड़े और शौत नामी जगह पर पहुंच कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। अब आप दुश्मन के बिल्कुल क़रीब थे और दोनों एक दूसरे को देख रहे थे। यहीं पहुंचकर अब्दुल्लाह बिन उबई ने सरकशी अख़्तियार

की और कोई एक तिहाई फ़ौज यानी तीन सौ लोगों को लेकर यह कहता हुआ वापस चला गया कि हम नहीं समझते कि क्यों ख़ामख़ाही अपनी जान दें। उसने इस बात पर भी रोष व्यक्त किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बात नहीं मानी और दूसरों की बात मान ली।

यक़ीनन इस अलगाव की वजह वह नहीं थी, जो इस मुनाफ़िक़ ने ज़ाहिर की थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बात नहीं मानी, क्योंकि इस शक्ल में नबी सल्ल० की फ़ौज के यहां तक उसके आने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था। उसे फ़ौज के चलने के पहले ही क़दम पर अलग हो जाना चाहिए था। इसलिए सच्चाई वह नहीं है, जो उसने ज़ाहिर की थी, बल्कि सच्चाई यह थी कि वह इस नाज़ुक मोड़ पर अलग होकर इस्लामी फ़ौज में ऐसे वक़्त बेचैनी और खलबली मचाना चाहता था, जब दुश्मन उसकी एक-एक हरकत देख रहा हो, ताकि एक ओर तो आम फ़ौजी नबी सल्ल० का साथ छोड़ दें, और जो बाक़ी रह जाएं उनके हौसले टूट जाएं।

दूसरी ओर इस दृश्य को देखकर दुश्मन की हिम्मतें बंधें और उसके हौसले बुलन्द हों। इसलिए यह कार्रवाई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सच्चे साथियों के ख़ात्मे का एक प्रभावी उपाय था, जिसके बाद उस मुनाफ़िक़ को उम्मीद थी कि उसकी और उसके साथियों की सरदारी के लिए मैदान साफ़ हो जाएगा।

क़रीब था कि यह मुनाफ़िक़ अपने कुछ उद्देश्यों को पाने में सफल हो जाता, क्योंकि दो और गिरोहों यानी औस क़बीले में से बनू हारिसा और ख़ज़रज क़बीले में से बनू सलमा के क़दम भी उखड़ चुके थे और वे वापसी की सोच रहे थे। लेकिन अल्लाह ने उनका हाथ पकड़ा और दोनों गिरोह बेचैनी और वापसी के इरादे के बाद जम गए। इन्हीं के बारे में अल्लाह का इर्शाद है—

'जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि भीरुता दिखाएं और अल्लाह उनका वली है और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।'

(2 : 122)

बहरहाल मुनाफ़िक़ों ने वापसी का फ़ैसला किया तो सबसे नाज़ुक मौक़े पर हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता हज़रत अब्दुल्लाह बिन हराम ने उन्हें उनका फ़र्ज़ याद दिलाना चाहा।

चुनांचे वह उन्हें डांटते हुए, वापसी पर उभारते हुए और यह कहते हुए उनके पीछे-पीछे चले कि आओ, अल्लाह की राह में लड़ो या रक्षा करो। मगर उन्होंने जवाब में कहा, अगर हम जानते कि आप लोग लड़ाई करेंगे, तो हम वापस न होते।

यह जवाब सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हराम रज़ि० यह कहते हुए वापस हुए कि ओ अल्लाह के दुश्मनो ! तुम पर अल्लाह की मार। याद रखो, अल्लाह अपने नबी को तुमसे उदासीन कर देगा।

इन्हीं मुनाफ़िक़ों के बारे में अल्लाह का इर्शाद है कि—

'... और ताकि अल्लाह इन्हें भी जान ले, जिन्होंने मुनाफ़क़त (छल-कपट) की और उनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ाई करो या रक्षा करो, तो उन्होंने कहा कि अगर हम लड़ाई जानते, तो यक़ीनन तुम्हारी पैरवी करते। ये लोग आज ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब हैं। मुंह से ऐसी बात कहते हैं जो दिल में नहीं है ओर ये जो कुछ छिपाते हैं, अल्लाह उसे जानता है।' (3 : 167)

बाक़ी इस्लामी फ़ौज उहुद की तलैटी में

इस सरकशी और वापसी के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाक़ी फ़ौज को लेकर, जिसकी तायदाद सात सौ थी, दुश्मन की ओर क़दम बढ़ा दिया। दुश्मन का पड़ाव आपके दर्मियान और उहुद के बीच कई दिशा से रोक बना हुआ था। इसलिए आपने मालूम किया कि कोई आदमी है जो हमें दुश्मन के पास से गुज़रे बिना किसी क़रीबी रास्ते से ले चले।

इसके जवाब में अबू ख़ैसमा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इसके लिए हाज़िर हूं।

फिर उन्होंने एक छोटा-सा रास्ता अपनाया, जो मुश्रिकों की फ़ौज को पश्चिम में छोड़ता हुआ बनी हारिसा के बाग़ों और खेतों से गुज़रता था।

इस रास्ते से जाते हुए फ़ौज का गुज़र मुरब्बा बिन क़ैज़ी के बाग़ से हुआ। यह व्यक्ति मुनाफ़िक़ भी था और अंधा भी। उसने फ़ौज का आना महसूस किया, तो मुसलमानों के चेहरों पर धूल फेंकने लगा और कहने लगा कि अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो याद रखें कि आपको मेरे बाग़ में आने की इजाज़त नहीं।

लोग उसे क़त्ल करने को लपके, लेकिन आपने फ़रमाया कि उसे क़त्ल न करो। यह दिल और आंख दोनों का अंधा है।

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़कर घाटी के आख़िरी सिरे पर स्थित उहुद पहाड़ की तलैटी में उतर पड़े और वहीं अपनी फ़ौज का कैम्प लगवाया। सामने मदीना था और पीछे उहुद का काफ़ी ऊंचा पहाड़।

इस तरह दुश्मन की फ़ौज मुसलमानों और मदीने के बीच एक सीमा-रेखा बन गई।

प्रतिरक्षात्मक योजना

यहां पहुंचकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौज को ख़ास तर्तीब दी और सामरिक दृष्टिकोण से उसे कई लाइनों में बांट दिया। माहिर तीरंदाज़ों का एक दस्ता भी ठीक-ठाक किया, जो पचास योद्धाओं पर सम्मिलित था। इनकी कमान हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन नोमान अंसारी दौसी बदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में थी और उन्हें क़नात घाटी के दक्षिणी किनारे पर स्थित एक छोटी-सी पहाड़ी पर, जो इस्लामी फ़ौज के कैम्प से कोई डेढ़ सौ मीटर दक्षिण-पूर्व मे स्थित है और अब रमात पहाड़ के नाम से मशहूर है, तैनात फ़रमाया।

इसका उद्देश्य इन शब्दों से स्पष्ट है जो आपने इन तीरंदाज़ों को हिदायत देते हुए इर्शाद फ़रमाए। आपने इनके कमांडर को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया—

'घुड़सवारों को तीर मारकर इनसे दूर रखो। वे पीछे से हम पर चढ़ न आएं। हम जीतें या हारें, तुम अपनी जगह रहना। तुम्हारी ओर से हम पर हमला न होने पाए।'[1]

फिर आपने तीरंदाज़ों को सम्बोधित करके फ़रमाया—

'हमारे पीछे की हिफ़ाज़त करना। अगर देखो कि हम मारे जा रहे हैं तो हमारी मदद को न आना और अगर देखो कि हम ग़नीमत का माल समेट रहे हैं, तो हमारे साथ शरीक न होना।'[2]

और सहीह बुख़ारी के शब्दों के अनुसार आपने यों फ़रमाया—

'अगर तुम लोग देखो कि हमें चिड़ियां उचक रही हैं, तो भी अपनी जगह न छोड़ना, यहां तक कि मैं बुला भेजूं और अगर तुम लोग देखो कि हमने क़ौम को हरा दिया है और उन्हें कुचल दिया है, तो भी अपनी जगह न छोड़ना, यहां तक कि मैं बुला भेजूं।'[3]

इन कड़े से कड़े फ़ौजी आर्डरों और हिदायतों के साथ उस टुकड़ी को उस पहाड़ी पर तैनात करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह एकमात्र दराड़ बन्द कर दी, जिसमें दाख़िल होकर मुश्रिकों का दस्ता मुसलमानों की सफ़ों के पीछे पहुंच सकता था, और उनको घेरे और नरग़े में ले सकता था।

---

1. इब्ने हिशाम, 2/65-66
2. अहमद, तबरानी, हाकिम, देखिए फ़त्हुल बारी 7/350
3. सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद 1/426

बाक़ी फ़ौज की तर्तीब यह थी कि मैमना (दाहिने बाज़ू) पर हज़रत मुंज़िर बिन अम्र मुक़र्रर हुए और मैसरा (बाएं बाज़ू) पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, और उनका सहायक हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० को बनाया गया।

हज़रत ज़ुबैर को यह मुहिम भी सौंपी गई थी कि वह ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवारों की राह रोके रखें। इस तर्तीब के अलावा सफ़ के अगले हिस्से में ऐसे विख्यात और चुनिंदा वीर योद्धा रखे गए जिनकी वीरता प्रसिद्ध थी और जिन्हें हज़ारों के बराबर माना जाता था।

बड़ी बारीकी और हिम्मत के साथ यह योजना तैयार हुई थी, जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान सैनिक नेतृत्त्व का पता चलता है और साबित होता है कि कोई कमांडर कितना ही योग्य क्यों न हो, आपसे ज़्यादा बारीक और हिक्मत से भरी योजना तैयार नहीं कर सकता, क्योंकि आप दुश्मन की फ़ौज के आने के बाद वहां पहुंचे थे, लेकिन आपने अपनी फ़ौज के लिए वह स्थान चुना जो सामरिक दृष्टिकोण से रण-क्षेत्र में सबसे अच्छी जगह थी।

यानी आपने पहाड़ की ऊंचाइयों की ओट लेकर अपना पीछा और दाहिना बाज़ू सुरक्षित कर लिया और बाएं बाज़ू से लड़ाई के बीच जिस इकलौते दरार से हमला करके पीछे तक पहुंचा जा सकता था, उसे तीरंदाज़ों के ज़रिए बन्द कर दिया और पड़ाव के लिए एक ऊंची जगह चुन ली कि अगर ख़ुदा न करे हार का सामना करना पड़े तो भागने और पीछा करने वालों की क़ैद में जाने के बजाए कैम्प में पनाह ली जा सके और अगर दुश्मन कैम्प पर क़ब्ज़े के लिए आगे बढ़े तो उसे बड़ा ज़बरदस्त घाटा पहुंचाया जा सके।

इसके विपरीत आपने दुश्मन को अपने कैम्प के लिए एक ऐसी निचली जगह क़ुबूल करने पर मजबूर कर दिया कि अगर वह ग़ालिब आ जाए तो जीत का कोई ख़ास फ़ायदा न उठा सके और अगर मुसलमान ग़ालिब आ जाएं तो वे पीछा करने वालों की पकड़ से बच न सके।

इसी तरह आपने प्रसिद्ध योद्धाओं की एक टीम बनाकर फ़ौजी तायदाद की कमी पूरी कर दी।

यह थी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फ़ौज की तर्तीब और तंज़ीम, जो 7 शव्वाल शनिवार को सुबह अमल में आई।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़ौज में प्राण फूंका

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया कि जब तक आप सल्ल० हुक्म न दें, लड़ाई शुरू न की जाए। आपने

ऊपर-नीचे दो कवच पहन रखे थे।

अब आपने सहाबा किराम को लड़ाई पर उभारते हुए ताकीद फ़रमाई कि जब दुश्मन से टकराव हो, तो साहस और धैर्य से काम लें। आपने उनमें वीरता और बहादुरी का प्राण फूंकते हुए एक बड़ी तेज़ नंगी तलवार को चमकाया और फ़रमाया, कौन है जो इस तलवार को लेकर इसका हक़ अदा करे?

इस पर कई सहाबा तलवार लेने के लिए लपक पड़े, जिनमें अली बिन अबी तालिब रज़ि०, ज़ुबैर बन अव्वाम रज़ि० और उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी थे। लेकिन अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इसका हक़ क्या है?

आपने फ़रमाया, इससे दुश्मन के चेहरे को मारो, यहां तक कि यह टेढ़ी हो जाए,

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इस तलवार को लेकर इसका हक़ अदा करना चाहता हूं।

आपने तलवार उन्हें दे दी।

अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े जांबाज़ थे। लड़ाई के वक़्त अकड़ कर चलते थे। उनके पास एक लाल पट्टी थी। जब उसे बांध लेते तो लोग समझ जाते कि वह अब मौत तक लड़ते रहेंगे।

चुनांचे जब उन्होंने तलवार ली तो सर पर पट्टी भी बांध ली और दोनों फ़रीक़ों की सफ़ों के दर्मियान अकड़ कर चलने लगे। यही मौक़ा था, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि यह चाल अल्लाह को नापसन्द है, लेकिन इस जैसे मौक़े पर नहीं।

मक्की फ़ौज का गठन

मुश्रिकों ने भी सफ़बन्दी ही के नियम पर अपनी फ़ौज को तर्तीब दिया था और उसका गठन किया था। उनका सेनापति अबू सुफ़ियान था, जिसने फ़ौज के बीच में अपना केन्द्र बनाया था। दाहिने बाजू पर खालिद बिन वलीद थे जो अभी तक मुश्रिक थे। बाएं बाज़ू पर इक्रिमा बिन अबू जह्ल था। पैदल फ़ौज की कमान सफ़वान बिन उमैया के पास थी और तीरंदाज़ों पर अब्दुल्लाह बिन रबीआ मुक़र्रर हुए।

झंडा बनू अब्दुद्दार की एक छोटी-सी टुकड़ी के हाथ में था। यह पद उन्हें उसी वक़्त से हासिल था जब बनू अब्द मुनाफ़ ने क़ुसई से विरासत में पाए हुए

पदों को आपस में बांट लिया था, जिसका विवरण शुरू किताब में गुज़र चुका है। फिर बाप-दादा से जो चलन चला आ रहा था, उसे देखते हुए कोई व्यक्ति इस पद के बारे में उनसे झगड़ भी नहीं सकता था।

लेकिन सेनापति अबू सुफ़ियान ने उन्हें याद दिलाया कि बद्र के मैदान में उनका झंडाबरदार नज़्र बिन हारिस गिरफ़्तार हुआ तो क़ुरैश को किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था और इस बात को याद दिलाने के साथ ही उनका गुस्सा भड़काने के लिए कहा,

'ऐ बनी अब्दुद्दार! बद्र के दिन आप लोगों ने हमारा झंडा ले रखा था, तो हमें जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, वह आपने देख ही लिया है। वास्तव में फ़ौज पर झंडे की ही ओर ज़ोर होता है। जब झंडा गिर पड़ता है, तो फ़ौज के क़दम उखड़ जाते हैं। पस अब की बार या तो आप लोग झंडा ठीक तौर से संभालें या हमारे और झंडे के बीच से हट जाएं। हम इसका इंतिज़ाम ख़ुद कर लेंगे।'

इस बातचीत से अबू सुफ़ियान का जो उद्देश्य था, उसमें वह सफल रहा, क्योंकि उसकी बात सुनकर बनू अब्दुद्दार को बड़ा ताव आया। उन्होंने धमकियां दीं, लगता था कि उस पर पिल पड़ेंगे।

कहने लगे, हम अपना झंडा तुम्हें देंगे? कल जब टक्कर होगी तो देख लेना कि हम क्या करते हैं?

और वाक़ई जब लड़ाई शुरू हुई तो वे पूरी बहादुरी से जमे रहे, यहां तक कि उनका एक-एक आदमी मौत के घाट उतर गया।

क़ुरैश की राजनीतिक चाल

लड़ाई शुरू होने से कुछ पहले क़ुरैश ने मुसलमानों की पंक्ति में फूट डालने और टकराव पैदा करने की कोशिश की। इस मक़्सद के लिए अबू सुफ़ियान ने अंसार के पास यह सन्देश भेजा कि आप लोग हमारे और हमारे चचेरे भाई (मुहम्मद) के बीच से हट जाएं, तो हमारा रुख़ भी आपकी ओर न होगा, क्योंकि हमें आप लोगों से लड़ने की कोई ज़रूरत नहीं। लेकिन जिस ईमान के आगे पहाड़ भी नहीं ठहर सकते, उसके आगे यह चाल कैसे सफल हो सकती थी? चुनांचे अंसार ने उसे बहुत कड़ा जवाब दिया और ख़ूब कड़ुवा-कसैला सुनाया।

फिर शून्य समय क़रीब आ गया और दोनों सेनाएं एक-दूसरे से क़रीब आ गईं तो क़ुरैश ने इस मक़्सद के लिए एक और कोशिश की, यानी उनका एक घटिया व्यक्ति अबू आमिर फ़ासिक़ मुसलमानों के सामने ज़ाहिर हुआ। उस व्यक्ति का नाम

अब्द अम्र बिन सैफ़ी था और उसे राहिब (सन्यासी) कहा जाता था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका नाम फ़ासिक़ रख दिया।

यह अज्ञानता-युग में औस क़बीले का सरदार था, लेकिन जब इस्लाम का आना-आना हुआ, तो इस्लाम उसके गले की फांस बन गया और वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ खुलकर दुश्मनी पर उतर गया। चुनांचे वह मदीना से निकलकर क़ुरैश के पास पहुंचा और उन्हें आपके ख़िलाफ़ भड़का-भड़का कर लड़ाई पर तैयार कर लिया और यक़ीन दिलाया कि मेरी क़ौम के लोग मुझे देखेंगे तो मेरी बात मान कर मेरे साथ हो जाएंगे।

चुनांचे यह पहला व्यक्ति था जो उहुद के मैदान में अहाबीश और मक्का वासियों के दासों के साथ मुसलमानों के सामने आया और अपनी क़ौम को पुकार कर अपना परिचय कराते हुए कहा—

'औस क़बीले के लोगो ! मैं अबू आमिर हूं।'

उन लोगों ने कहा, 'ओ फ़ासिक़ ! अल्लाह तेरी आंख को ख़ुशी न नसीब करे।'

उसने यह जवाब सुना तो कहा, ओहो ! मेरी क़ौम मेरे बाद शरारत पर उतर आई है। (फिर जब लड़ाई शुरू हुई तो उस व्यक्ति ने बड़ी ज़ोरदार लड़ाई लड़ी और मुसलमानों पर जमकर पत्थर बरसाए।)

इस तरह क़ुरैश की ओर से ईमान वालों की सफ़ों में फूट डालने की दूसरी कोशिश भी नाकाम रही। इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि तायदाद की अधिकता और साज़ व सामान की बहुतायत के बावजूद मुश्रिकों के दिलों पर मुसलमानों का कितना भय और उनका कैसा आतंक छाया हुआ था।

जोश और हिम्मत दिलाने के लिए क़ुरैशी औरतों की कोशिशें

उधर क़ुरैशी औरतें भी लड़ाई में अपना हिस्सा अदा करने उठीं। उनका नेतृत्त्व अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा कर रही थी। इन औरतों ने सफ़ों में घूम-घूमकर और दफ़ पीट-पीटकर लोगों को जोश दिलाया, लड़ाई के लिए भड़काया, योद्धाओं के स्वाभिमान को ललकारा और नेज़ा मारने, तलवार चलाने, मार-धाड़ करने और तीर चलाने के लिए भावनाओं को उभारा, कभी वे झंडाबरदारों को सम्बोधित करके यों कहतीं—

'देखो बनी अब्दुद्दार !

देखो पीठ के पासदार !

ख़ूब करो तलवार का वार!

और कभी अपनी क़ौम को लड़ाई का जोश दिलाते हुए यों कहतीं—

'अगर आगे बढ़ोगे तो हम गले लगाएंगी,

और क़ालीनें बिछाएंगी,

और अगर पीछे हटोगे, तो रूठ जाएंगी,

और अलग हो जाएंगी।'

लड़ाई का पहला ईंधन

इसके बाद दोनों फ़रीक़ बिल्कुल आमने-सामने और क़रीब आ गए और लड़ाई का मरहला शुरू हो गया।

लड़ाई का पहला ईंधन मुश्रिकों का झंडाबरदार तलहा बिन अबी तलहा अब्दरी बना। यह व्यक्ति क़ुरैश का अति वीर योद्धा था। उसे मुसलमान 'कबशुल कतीबा' (फ़ौज का मेंढा) कहते थे। यह ऊंट पर सवार होकर निकला और लड़ने के लिए ललकारा।

उसकी वीरता देखते हुए आम सहाबा कतरा गए। लेकिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि० आगे बढ़े और एक क्षण देर किए बिना शेर की तरह छलांग लगा कर ऊंट पर जा चढ़े। फिर उसे अपनी पकड़ में लेकर ज़मीन में कूद गए और तलवार से उसका वध कर दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह उत्साहवर्द्धक दृश्य देखा तो मारे ख़ुशी के अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया। मुसलमानों ने अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया, फिर आपने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की प्रशंसा की और फ़रमाया कि हर नबी का एक हवारी होता है और मेरे हवारी ज़ुबैर हैं।[1]

लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु और झंडा बरदारों का सफ़ाया

इसके बाद हर ओर लड़ाई के शोले भड़क उठे और पूरे मैदान में जोरदार मार-धाड़ शुरू हो गई। मुश्रिकों का झंडा लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु था। बनू अब्दुद्दार ने अपने कमांडर तलहा बिन अबी तलहा के क़त्ल के बाद एक-एक करके झंडा संभाला, लेकिन सबके सब मारे गए।

सबसे पहले तलहा के भाई उस्मान बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया और यह

---

1. इसका उल्लेख साहिबे सीरत हलबीया ने किया है, वरना हदीसों में यह वाक्य दूसरे अवसर पर कहा गया मिलता है।

कहते हुए आगे बढ़ा—'झंडे वालों का कर्त्तव्य है कि नेज़ा (खून से) रंगीन हो जाए, या टूट जाए।'

उस व्यक्ति पर हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमला किया और उसके कंधे पर ऐसी तलवार मारी कि वह हाथ समेत कंधे को काटती और देह को चीरती हुई नाफ़ तक जा पहुंची, यहां तक कि फेफड़ा दिखाई देने लगा।

इसके बाद अबू साद बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया। उस पर हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीर चलाया और वह ठीक उसके गले पर लगा जिससे उसकी जीभ बाहर निकल आई और वह उसी वक़्त मर गया।

लेकिन कुछ सीरत लिखने वालों का कहना है कि अबू साद ने बाहर निकल कर लड़ने के लिए ललकारा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर मुक़ाबला किया। दोनों ने एक दूसरे पर तलवार का एक-एक वार किया, लेकिन हज़रत अली रज़ियल्लहु अन्हु ने अबू साद को मार लिया।

इसके बाद मुसाफ़िह बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया, लेकिन उसे आसिम बिन साबित बिन अबी अफ़्लह रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीर मारकर क़त्ल कर दिया।

इसके बाद उसके भाई किलाब बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया, पर उस पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु टूट पड़े और लड़-भिड़कर उसका काम तमाम कर दिया, फिर इन दोनों के भाई जलास बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया, मगर उसे तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० ने नेज़ा मारकर ख़त्म कर दिया और कहा जाता है कि आसिम बिन साबित बिन अबी अफ़्लह रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीर मारकर ख़त्म कर दिया।

ये एक ही घर के छः लोग थे। यानी सबके सब अबू तलहा अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन अब्दुद्दार के बेटे या पोते थे, जो मुश्रिकों के झंडे की हिफ़ाज़त करते हुए मारे गए। इसके बाद क़बीला अब्दुद्दार के एक और व्यक्ति अरतात बिन शुरहबील ने झंडा संभाला, लेकिन उसे हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने, और कहा जाता है कि हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल कर दिया।

इसके बाद शुरैह बिन क़ारिज़ ने झंडा उठाया, पर उसे कुज़मान ने क़त्ल कर दिया। कुज़मान मुनाफ़िक़ था और इस्लाम के बजाए क़बीले की हमीयत के जोश में मुसलमानों के साथ लड़ने आया था।

शुरैह के बाद अबू ज़ैद अम्र बिन अब्दे मुनाफ़ अब्दरी ने झंडा उठाया, पर उसे भी क़ुज़मान ने ठिकाने लगा दिया।

फिर शुरहबील बिन हाशिम अब्दरी के एक लड़के ने झंडा उठाया, पर वह भी क़ुज़मान के हाथों मारा गया।

यह बनू अब्दुद्दार के दस लोग हुए, जिन्होंने मुश्रिकों का झंडा उठाया और सबके सब मारे गए। इसके बाद उस क़बीले का कोई आदमी न बचा, जो झंडा उठाता, लेकिन इस मौक़े पर उनके एक हबशी ग़ुलाम ने, जिसका नाम सवाब था, लपक कर झंडा उठा लिया और ऐसी बहादुरी से लड़ा कि अपने से पहले झंडा उठाने वाले अपने आक़ाओं से भी बाज़ी ले गया, यानी यह व्यक्ति बराबर लड़ता रहा, यहां तक कि उसके दोनों हाथ एक-एक करके काट दिए गए, लेकिन इसके बाद भी उसने झंडा न गिरने दिया, बल्कि घुटने के बल बैठ कर सीने और गरदन की मदद से खड़ा रखा, यहां तक कि जान से मार डाला गया और उस वक़्त भी यह कह रहा था कि ऐ अल्लाह! अब तो मैंने कोई उज़्र बाक़ी न छोड़ा?

उस दास (सवाब) की हत्या के बाद झंडा ज़मीन पर गिर गया और उसे कोई उठाने वाला न बचा, इसलिए वह गिरा ही रहा।

बाक़ी हिस्सों में लड़ाई की स्थिति

एक ओर मुश्रिकों का झंडा लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु था, तो दूसरी ओर मैदान के दूसरे बाक़ी हिस्सों में तेज़ लड़ाई चल रही थी। मुसलमानों की सफ़ों पर ईमान की रूह छाई हुई थी, इसलिए वे शिर्क और कुफ़्र की फ़ौज पर उस बाढ़ की तरह टूटे पड़ रहे थे, जिसके सामने कोई बांध ठहर नहीं पाता। मुसलमान इस मौक़े पर 'अमित-अमित' कह रहे थे और इस लड़ाई में यही उनकी पहचान थी।

इधर अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी लाल पट्टी बांध अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार थामे और उसका हक़ अदा करने का संकल्प लिए आगे बढ़ते रहे और लड़ते हुए दूर जा घुसे। वह जिस किसी मुश्रिक से टकराते, उसका सफ़ाया कर देते थे। उन्होंने मुश्रिकों की सफ़ों की सफ़ें उलट दीं।

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तलवार मांगी और आपने मुझे न दी, तो मेरे दिल पर उसका असर हुआ और मैंने अपने जी में सोचा कि आपकी फूफी हज़रत सफ़िया का बेटा हूं, क़ुरैशी हूं और मैंने आपके पास जाकर अब दुजाना से पहले तलवार मांगी, लेकिन आपने मुझे न दी और उन्हें दे दी,

इसलिए ख़ुदा की क़सम ! मैं देखूंगा कि वह इससे क्या काम लेते हैं ?

चुनांचे मैं उनके पीछे लग गया। उन्होंने यह किया कि पहले अपनी लाल पट्टी निकाली, और सर पर बांधी। इस पर अंसार ने कहा, अबू दुजाना ने मौत की पट्टी निकाल ली है। फिर वह यह कहते हुए मैदान की ओर बढ़े—

'मैंने इस मरुद्यान में अपने ख़लील (मित्र, सल्ल०) को वचन दिया है कि कभी सफ़ों के पीछे न रहूंगा, (बल्कि आगे बढ़कर) अल्लाह और उसके रसूल की तलवार चलाऊंगा।'

इसके बाद उन्हें जो भी मिल जाता, उसको क़त्ल कर देते। इधर मुश्रिकों में एक व्यक्ति था जो हमारे किसी भी घायल को पा जाता, तो उसका अन्त कर देता था। ये दोनों धीरे-धीरे क़रीब हो रहे थे। मैंने अल्लाह से दुआ की कि दोनों में टक्कर हो जाए और सच में टक्कर हो गई। दोनों ने एक दूसरे पर एक-एक वार किया। पहले मुश्रिक ने अबू दुजाना पर तलवार चलाई, लेकिन अबु दुजाना ने यह हमला ढाल पर रोक लिया और मुश्रिक की तलवार ढाल में फंस कर रह गई। इसके बाद अबू दुजाना ने तलवार चलाई और मुश्रिक को वहीं ढेर कर दिया।[1]

इसके बाद अबू दुजाना सफ़ों पर सफ़ें चीरते हुए आगे बढ़े, यहां तक कि क़ुरैशी औरतों की कमांडर तक जा पहुंचे। उन्हें मालूम था कि यह औरत है। चुनांचे उनका बयान है कि मैंने एक इंसान को देखा, वह लोगों को बड़े जोर व शोर से जोश और वलवला दिला रहा है। इसलिए मैंने उसको निशाने पर ले लिया, लेकिन जब तलवार से हमला करना चाहा तो उसने हाय-पुकार मचाई और पता चला कि औरत है। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार को बट्टा न लगने दिया कि उससे किसी औरत को मारूं।

यह औरत हिन्द बिन उत्बा थी। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने अबू दुजाना को देखा, उन्होंने हिन्द बिन उत्बा के सर के बीचों बीच तलवार बुलन्द की और फिर हटा ली। (किसी ने कारण जानना चाहा, तो) मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० बेहतर जानते हैं।[2]

इधर हज़रत हमज़ा रज़ि० भी बिफरे हुए शेर की तरह लड़ाई लड़ रहे थे और अपूर्व मार-धाड़ के साथ सेना के बीच के हिस्से की ओर बढ़े और चढ़े जा रहे थे। उनके सामने से बड़े-बड़े बहादुर इस तरह बिखर जाते थे, जैसे चौमुखी

---

1. इब्ने हिशाम, 2/68-69
2. इब्ने हिशाम, 2/69

हवा में पत्ते उड़ रहे हों। उन्होंने मुश्रिकों के झंडा बरदारों के सफ़ाए में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के अलावा उनके बड़े-बड़े योद्धाओं का भी हाल ख़राब कर रखा था, लेकिन अफ़सोस कि इसी हाल में उनकी शहादत हो गई, मगर उन्हें बहादुरों की तरह आमने-सामने लड़ कर शहीद नहीं किया गया, बल्कि डरपोकों की तरह छिप-छिपाकर बेख़बरी की हालत में मारा गया।

अल्लाह के शेर हज़रत हमज़ा की शहादत

हज़रत हमज़ा रज़ि० के क़ातिल का नाम वहशी बिन हर्ब था। हम उनकी शहादत की घटना उसी की ज़ुबानी नक़ल करते हैं। उसका बयान है कि—

'मैं जुबैर बिन मुतइम का दास था और उसका चचा तुऐमा बिन अदी बद्र की लड़ाई में मारा गया था। जब क़ुरैश उहुद की लड़ाई के लिए रवाना होने लगे, तो जुबैर बिन मुतइम ने मुझसे कहा, अगर तुम मुहम्मद के चचा हमज़ा को मेरे चचा के बदले में क़त्ल कर दो, तो तुम आज़ाद हो।'

वहशी का बयान है कि (इस पेशकश के नतीजे में) मैं भी लोगों के साथ रवाना हुआ। मैं हब्शी आदमी था और हब्शियों की तरह नेज़ा फेंकने में माहिर था। निशाना कम ही चूकता था। जब लोगों में लड़ाई छिड़ गई तो मैं निकलकर हमज़ा को देखने लगा। मेरी निगाहें उन्हीं की खोज में थीं। आख़िरकार मैंने उन्हें लोगों की भीड़ में देख लिया। वह ख़ाकस्तरी ऊंट मालूम हो रहे थे। लोगों को दरहम-बरहम करते जा रहे थे। उनके सामने कोई चीज़ टिक नहीं पाती थी।

ख़ुदा की क़सम! मैं अभी उनके इरादे से तैयार ही हो रहा था और एक पेड़ या पत्थर की आड़ में छिपकर उन्हें क़रीब आने का मौक़ा देना चाहता था कि इतने में सबाअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा मुझसे आगे बढ़कर उनके पास जा पहुंचा।

हमज़ा रज़ि० ने उसे ललकारते हए कहा, ओ शर्मगाह की चमड़ी काटने वाली के बेटे! यह ले। और साथ ही इस ज़ोर की तलवार मारी कि मानो उसका सर था ही नहीं।

वहशी का बयान है कि उसके साथ ही मैंने अपना नेज़ा तोला और जब मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो गया तो उनकी तरफ़ उछाल दिया। नेज़ा नाफ़ के नीचे लगा और दोनों पांवों के बीच से पार हो गया। उन्होंने मेरी ओर उठना चाहा, लेकिन चकरा कर गिर पड़े। मैंने उनको उसी हाल में छोड़ दिया, यहां तक कि वह फ़ौत हो गए।

इसके बाद मैंने उनके पास जाकर अपना नेज़ा निकाल लिया और फ़ौज में वापस जाकर बैठ गया। (मेरा काम ख़त्म हो चुका था) मुझे उनके सिवा और

किसी से कोई मतलब नहीं था। मैंने उन्हें सिर्फ़ इसलिए क़त्ल किया था कि आज़ाद हो जाऊं। चुनांचे जब मैं मक्का आया तो मुझे आज़ादी मिल गई।[1]

मुसलमानों का पल्ला भारी रहा

अल्लाह के शेर और रसूल सल्ल० के शेर हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत के नतीजे में मुसलमानों को जो बड़ा संगीन घाटा और न पूरा किया जाने वाला नुक़्सान पहुंचा, इसके बावजूद लड़ाई में मुसलमानों ही का पल्ला भारी रहा। हज़रत अबूबक्र व उमर, ज़ुबैर, मुसअब बिन उमैर, तलहा बिन उबैदुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन जह्श, साद बिन मुआज़, साद बिन उबादा, साद बिन रबीअ और नज़्र बिन अनस वग़ैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने लड़ाई में ऐसी वीरता दिखाई कि मुश्रिकों के छक्के छूट गए, हौसले पस्त हो गए और उनका मनोबल टूट गया।

औरत की गोद से तलवार की धार पर

और आइए, ज़रा इधर देखें। इन्हीं जां फ़रोश शहबाज़ों में एक और बुज़ुर्ग हज़रत हंज़ला अल-ग़सील रज़ियल्लाहु अन्हु नज़र आ रहे हैं, जो आज एक निराली शान से लड़ाई के मैदान में आए हैं। आप उसी अबू आमिर राहिब के बेटे हैं, जो बाद में फ़ासिक़ के नाम से जाना जाने लगा और जिसका ज़िक्र हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं।

हज़रत हंज़ला ने अभी नई-नई शादी की थी। लड़ाई का एलान हुआ तो वह बीवी की गोद में थे। आवाज़ सुनते ही गोद से निकलकर जिहाद के लिए चल पड़े। और जब मुश्रिकों के साथ लड़ाई गरम हुई तो उनकी लाइनें चीरते-फाड़ते, उनके सेनापति अबू सुफ़ियान तक जा पहुंचे और क़रीब था कि उसका काम तमाम कर देते, पर अल्लाह ने ख़ुद उनके लिए शहीद होना मुक़द्दर कर रखा था। चुनांचे उन्होंने ज्यों ही अबू सुफ़ियान को निशाने पर लेकर तलवार ऊंची की, शद्दाद बिन औस ने देख लिया और झट हमला कर दिया, जिससे ख़ुद हज़रत हंज़ला शहीद हो गए।

---

1. इब्ने हिशाम, 2/69-72, सहीह बुख़ारी 2/583। वह्शी ने तायफ़ की लड़ाई के बाद इस्लाम क़ुबूल किया और अपने उसी नेज़े से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के दौर में यमामा की लड़ाई में मुसैलमा कज़्ज़ाब (झूठी नुबूवत के दावेदार) को क़त्ल किया। रूमियों के ख़िलाफ़ यरमूक की लड़ाई में भी शिरकत की।

तीरंदाज़ों का कारनामा

रमात पहाड़ी पर जिन तीरंदाज़ों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैनात फ़रमाया था, उन्होंने भी लड़ाई की रफ़्तार मुसलमानों के हक़ में चलाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मक्की शहसवारों ने खालिद बिन वलीद के नेतृत्त्व में और अबू आमिर फ़ासिक़ की मदद से इस्लामी फ़ौज का बायां बाज़ू तोड़कर मुसलमानों के पीछे तक पहुंचने और उनकी सफ़ों में खलबली मचाकर भरपूर हार का मज़ा चखाने के लिए तीन बार ज़ोरदार हमले किए, लेकिन मुसलमान तीरंदाज़ों ने इन्हें इस तरह तीरों से छलनी किया कि उनके तीनों हमले असफल हो गए।[1]

मुश्रिकों की हार

कुछ देर इसी तरह तेज़-तेज़ लड़ाई होती रही और छोटी-सी इस्लामी फ़ौज, लड़ाई की रफ़्तार पर पूरी तरह छाई रही। आख़िरकार मुश्रिकों के हौसले टूट गए, उनकी लाइनें दाएं, बाएं, आगे-पीछे से बिखरने लगीं, गोया तीन हज़ार मुश्रिकों को सात सौ नहीं, बल्कि तीस हज़ार मुसलमानों का सामना है।

इधर मुसलमान थे कि ईमान व यक़ीन और बहादुरी और वीरता का पहाड़ बने तीर-तलवार के जौहर दिखा रहे थे।

जब क़ुरैश ने मुसलमानों के ताबड़-तोड़ हमले रोकने के लिए अपनी भरपूर ताक़त लगा देने के बावजूद मजबूरी और बेबसी महसूस की और उनका मनोबल इस हद तक टूट गया कि सवाब के क़त्ल के बाद किसी को साहस न हुआ कि लड़ाई का सिलसिला जारी रखने के लिए अपने गिरे हुए झंडे के क़रीब जाकर उसे उठा ले, तो उन्होंने पसपा होना शुरू कर दिया और पीछे भागने का रास्ता अपना लिया और बदला लेने और खोई प्रतिष्ठा बहाल करने की जो बातें उन्होंने सोच रखी थीं, उन्हें वे बिल्कुल ही भूल गए।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि अल्लाह ने मुसलमानों पर अपनी मदद उतारी और उनसे अपना वायदा पूरा किया। चुनांचे मुसलमानों ने तलवारों से मुश्रिकों की ऐसी कटाई की कि वे कैम्प से भी परे भाग गए और निस्सन्देह उन्हें ज़बरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि उनके पिता ने फ़रमाया,

---

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/346

ख़ुदा की क़सम, मैंने देखा कि हिन्द बिन्त उत्बा और उसकी साथी औरतों की पिंडुलियां नज़र आ रही हैं। वे कपड़े उठाए भागी जा रही हैं। उनकी गिरफ़्तारी में थोड़ा या ज़्यादा कोई चीज़ भी रोक नहीं।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि जब मुश्रिकों से हमारी टक्कर हुई तो मुश्रिकों में भगदड़ मच गई, यहां तक कि मैंने औरतों को देखा कि पिंडलियों से कपड़े उठाए पहाड़ में तेज़ी से भाग रही थीं। उनके पाज़ेब दिखाई पड़ रहे थे और इस भगदड़ की स्थिति में मुसलमान मुश्रिकों पर तलवार चलाते और माल समेटते हुए उनका पीछा कर रहे थे।

तीरंदाज़ों की भयानक ग़लती

लेकिन ठीक उस वक़्त जबकि यह छोटी-सी इस्लामी फ़ौज मक्का वालों के ख़िलाफ़ इतिहास के पन्नों पर एक और शानदार जीत दर्ज करा रही थी जो अपनी चमक-दमक में बद्र की लड़ाई की जीत से किसी तरह कम न थी, तीरंदाज़ों की बड़ी संख्या ने एक भयानक ग़लती कर दी जिसकी वजह से लड़ाई का पांसा पलट गया। मुसलमानों को ज़बरदस्त नुक़्सान उठाना पड़ा और ख़ुद नबी करीम सल्ल० शहादत से बाल-बाल बचे और इसकी वजह से मुसलमानों की वह साख और वह रौब जाता रहा जो बद्र की लड़ाई के नतीजे में उन्हें हासिल हुआ था।

पिछले पन्नों में बीत चुका है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीरंदाज़ों को हार या जीत हर हाल में अपने पहाड़ी मोर्चे पर डटे रहने की कितनी ज़बरदस्त ताकीद फ़रमाई थी, लेकिन इन सारे ताकीदी हुक्मों के बावजूद जब उन्होंने देखा कि मुसलमान दुश्मन का माले ग़नीमत लूट रहे हैं, तो उन पर दुनिया की मुहब्बत का कुछ असर ग़ालिब आ गया। चुनांचे किसी ने किसी से कहा, ग़नीमत. . .! ग़नीमत. . . .! तुम्हारे साथी जीत गए. . . .! अब किस चीज़ का इन्तिज़ार है!

इस आवाज़ के उठते ही उनके कमांडर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश याद दिलाए और फ़रमाया कि क्या तुम लोग भूल गए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें क्या आदेश दिया था?

लेकिन उनकी बड़ी तायदाद ने इस याददेहानी पर कान न धरा और कहने

1. सहीह बुख़ारी 2/579

लगे, ख़ुदा की क़सम! हम भी लोगों के पास ज़रूर जाएंगे और कुछ माले ग़नीमत ज़रूर हासिल करेंगे।[1]

इसके बाद चालीस तीरंदाज़ों ने अपने मोर्चे छोड़ दिए और माले ग़नीमत समेटने के लिए आम फ़ौज में जा शामिल हुए। इस तरह मुसलमानों का पिछला भाग ख़ाली हो गया और वहां सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके नौ साथी बाक़ी रह गए जो इस संकल्प के साथ अपने मोर्चे पर डटे रहे कि या तो इन्हें इजाज़त दी जाएगी या वे अपनी जान दे देंगे।

इस्लामी फ़ौज मुश्रिकों के घेरे में

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, जो इससे पहले तीन बार इस मोर्चे को क़ाबू में करने की कोशिश कर चुके थे, इस सुनहरे मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए बड़ी तेज़ी से चक्कर काट कर इस्लामी फ़ौज के पिछले हिस्से में पहुंचे और कुछ क्षणों में अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके साथियों का सफ़ाया करके मुसलमानों पर पीछे से टूट पड़े। उनके घुड़सवारों ने एक नारा लगाया, जिससे हारे हुए मुश्रिकों को इस नई तब्दीली का पता लग गया और वे भी मुसलमानों पर टूट पड़े।

इधर क़बीला बनू हारिस की एक औरत उमरा बिन्त अलक़मा ने लपक कर ज़मीन पर पड़ा हुआ मुश्रिकों का झंडा उठा लिया। फिर क्या था! बिखरे हुए मुश्रिक उसके आस-पास सिमटने लगे और एक ने दूसरे को आवाज़ दी, जिसके नतीजे में वे मुसमलानों के ख़िलाफ़ इकट्ठा हो गए और जम कर लड़ाई शुरू कर दी।

अब मुसलमान आगे और पीछे दोनों ओर से घेरे में आ चुके थे, मानो चक्की के दो पाटों के बीच में पड़ गए थे।

अल्लाह के रसूल सल्ल० का ख़तरे से भरा फ़ैसला और वीरतापूर्ण क़दम

उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ नौ[2] सहाबा की नफ़री के साथ पीछे तशरीफ़[3] रखते थे और मुसलमानों की मार-धाड़ और

1. यह बात सहीह बुख़ारी में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० से रिवायत की गई है। देखिए 1/426
2. सहीह मुस्लिम (2/107) में रिवायत है कि आप उहुद के दिन सिर्फ़ सात अंसार और दो क़ुरैशी साथियों के दर्मियान रह गए थे।
3. इसकी दलील अल्लाह का यह इर्शाद है कि 'रसूल तुम्हारे पीछे से तुम्हें बुला रहे थे।'

मुश्रिकों के खदेड़े जाने का दृश्य देख रहे थे कि आपको अचानक ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवार दिखाई दिए।

इसके बाद आपके सामने दो ही रास्ते थे, या तो आप अपने नौ साथियों के साथ तेज़ी से भाग कर किसी सुरक्षित जगह चले जाते और अपनी फ़ौज को जो अब घेरे में आया ही चाहती थी, उसके भाग्य पर छोड़ देते या अपनी जान ख़तरे में डालकर अपने सहाबा को बुलाते और उनकी एक बड़ी तायदाद अपने पास जमा करके एक मज़बूत मोर्चा जमाते और उसके ज़रिए मुश्रिकों का घेरा तोड़ कर अपनी फ़ौज के लिए उहुद की ऊंचाई की ओर जाने का रास्ता बनाते।

आज़माइश की इस सबसे नाज़ुक घड़ी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से विवेक और अपूर्व वीरता का प्रदर्शन हुआ, क्योंकि आपने जान बचाकर भागने के बजाए अपनी जान ख़तरे में डालकर सहाबा किराम की जान बचाने का फ़ैसला किया।

चुनांचे आपने ख़ालिद बिन वलीद् के घुड़सवारों को देखते ही बड़ी ऊंची आवाज़ में सहाबा को पुकारा, 'अल्लाह के बन्दो, इधर....'

हालांकि आप जानते थे कि यह आवाज़ मुसलमानों से पहले मुश्रिकों तक पहुंच जाएगी और यही हुआ भी।

चुनांचे यह आवाज़ सुनकर मुश्रिकों को मालूम हो गया कि आप यहीं मौजूद हैं। इसलिए उनका एक दस्ता मुसलमानों से पहले आपके पास पहुंच गया और बाक़ी घुड़सवारों ने तेज़ी के साथ मुसलमानों को घेरना शुरू कर दिया।

अब हम दोनों मोर्चे का विवेचन अलग-अलग कर रहे हैं।

मुसलमानों में बिखराव

जब मुसलमान घेरे में आ गए, तो एक गिरोह तो होश खो बैठा। उसे सिर्फ़ अपनी जान की पड़ी थी। चुनांचे उसने लड़ाई का मैदान छोड़कर भागने का रास्ता अपनाया। उसे कुछ ख़बर न थी कि पीछे क्या हो रहा है? उनमें से कुछ तो भाग कर मदीने में जा घुसे और कुछ पहाड़ के ऊपर चढ़ गए।

एक और गिरोह पीछे की ओर पलटा तो मुश्रिकों में मिल गया। दोनों फ़ौजें गड्ड-मड्ड हो गईं और एक को दूसरे का पता न चल सका। इसके नतीजे में ख़ुद मुसलमानों के हाथों कुछ मुसलमान मार डाले गए।

चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि उहुद के दिन (पहले) मुश्रिकों की ज़ोरदार हार हुई, इसके बाद इब्लीस ने आवाज़ लगाई

कि अल्लाह के बन्दो! पीछे. . . .! इससे अगली लाइन पलटी और पिछली लाइन से गुथ गई।

हुज़ैफ़ा ने देखा कि उनके पिता यमान पर हमला हो रहा है, वह बोले, 'अल्लाह के बन्दो! मेरे पिता हैं।' लेकिन ख़ुदा की क़सम! लोगों ने उनसे हाथ न रोका, यहां तक कि उन्हें मार ही डाला।

हुज़ैफ़ा ने कहा, अल्लाह आप लोगों की मग़्फ़िरत करे।

हज़रत उर्वः का बयान है कि ख़ुदा की क़सम! हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० में हमेशा ख़ैर बाक़ी रहा, यहां तक कि वह अल्लाह से जा मिले।[1]

तात्पर्य यह कि इस गिरोह की सफ़ों में बिखराव और अफ़रा-तफ़री पैदा हो गई थी। बहुत से लोग चकित और स्तब्ध थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किधर जाएं। इसी बीच एक पुकारने वाले की पुकार सुनाई दी कि मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए हैं। इससे रहा-सहा होश भी जाता रहा। अक्सर लोगों के हौसले टूट गए। कुछ ने लड़ाई से हाथ रोक लिया, और दुखी होकर हथियार फेंक दिए।

कुछ और लोगों ने सोचा कि मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई से मिलकर कहा जाए कि वह अबू सुफ़ियान से उनके लिए अमान तलब कर दे।

कुछ क्षणों के बाद इन लोगों के पास से हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ। देखा कि हाथ पर हाथ धरे पड़े हैं। पूछा, किस बात का इन्तिज़ार है?

जवाब दिया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए।

हज़रत अनस बिन नज़्र ने कहा, तो अब आपके बाद तुम लोग ज़िंदा रहकर क्या करोगे? उठो और जिस चीज़ पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जान दे दी, उस पर तुम भी जान दे दो।

इसके बाद कहा, ऐ अल्लाह! इन लोगों ने (यानी मुसलमानों ने) जो कुछ किया

---

1. सहीह बुख़ारी 1/539, 2/581, फ़त्हुल बारी 7/351, 362, 363, बुख़ारी के अलावा कुछ रिवायतों में ज़िक्र किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी दियत देनी चाही, लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, मैंने उनकी दियत मुसलमानों पर सदक़ा कर दी। इसकी वजह से नबी सल्लल्लाहु व सल्लम के नज़दीक हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के ख़ैर में और बढ़ोत्तरी हो गई। देखिए मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह नज्दी पृष्ठ 246।

है, उस पर मैं तेरे हुज़ूर माज़रत करता हूं और उन लोगों ने (यानी मुश्रिकों ने) जो कुछ किया है, उससे अलगाव अपनाता हूं और यह कहकर आगे बढ़ गए।

आगे हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने मालूम किया, अबू उमर! कहां जा रहे हो?

हज़रत अनस रज़ि० ने जवाब दिया, आहा! जन्नत की ख़ुशबू का क्या कहना, ऐ साद! मैं इसे उहुद के परे महसूस कर रहा हूं। इसके बाद और आगे बढ़े और मुश्रिकों से लड़ते हुए शहीद हो गए।

लड़ाई के अन्त में उन्हें पहचाना न जा सका, यहां तक कि उनकी बहन ने उन्हें सिर्फ़ उंगुलियों के पोर से पहचाना। उनको नेज़े, तलवार और तलवार के अस्सी से ज़्यादा घाव आए थे।[1]

इसी तरह साबित बिन दह्दाह रज़ि० ने अपनी क़ौम को पुकार कर कहा, अगर मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर दिए गए हैं, तो अल्लाह तो ज़िंदा है, वह तो नहीं मर सकता। तुम अपने दीन के लिए लड़ो। अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें विजय भी देगा।

इस पर अंसार की एक जमाअत उठ खड़ी हुई और हज़रत साबित रज़ि० ने उनकी मदद से ख़ालिद की टुकड़ी पर हमला कर दिया और लड़ते-लड़ते ख़ालिद के हाथों नेज़े से शहीद हो गए।

उन्हीं की तरह उनके साथियों ने भी लड़ते-लड़ते शहादत का दर्जा हासिल कर लिया।[2]

एक मुहाजिर सहाबी एक अंसारी सहाबी के पास से गुज़रे, जो ख़ून में लत-पत थे।

मुहाजिर ने कहा, भाई फ्लां! आपको मालूम हो चुका है कि मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए?

अंसारी ने कहा, अगर मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए, तो वह अल्लाह का दीन पहुंचा चुके हैं। अब तुम्हारा काम है कि उस दीन की हिफ़ाज़त के लिए लड़ो।[3]

इस तरह की हौसला बढ़ाने वाली और मनोबल ऊंचा करने वाली बातों से इस्लामी फ़ौज के हौसले बहाल हो गए और उनके होश व हवास अपनी जगह आ

---

1. ज़ादुल मआद, 2/93-96, सहीह बुख़ारी, 2/579
2. अस्सीरतुल हलबीया, 2/22
3. ज़ादुल मआद, 2/96

गए। चुनांचे उन्होंने हथियार डालने या इब्ने उबई से मिलकर अमान की तलब की बात सोचने के बजाए हथियार उठा लिए और मुश्रिकों के तेज़ तूफ़ान से टकरा कर उनका घेरा तोड़ने और नेतृत्व-केन्द्र तक रास्ता बनाने की कोशिश में लग गए।

इसी बीच यह भी मालूम हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के क़त्ल की ख़बर सिर्फ़ झूठ और गढ़ी हुई है, इससे उनकी ताक़त और बढ़ गई, उनका हौसला बढ़ा और मनोबल और ऊंचा हो गया, चुनांचे वे एक भयानक और ख़ूनी लड़ाई के बाद घेरा तोड़कर निकलने और एक मज़बूत सेन्टर के क़रीब जमा होने में कामियाब हो गए।

इस्लामी फ़ौज का तीसरा गिरोह वह था जिसे सिर्फ़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता थी। यह गिरोह घेराव की कार्रवाई को जानते ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर पलटा। उनमें कई आगे-आगे और सबसे पहले अबू बक्र सिद्दीक़, उमर बिन ख़त्ताब और अली बिन अबी तालिब जैसे सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन थे।

ये लोग लड़ने वालों में भी सबसे आगे थे और जब नबी सल्ल० की पवित्र हस्ती के लिए ख़तरा पैदा हुआ तो आपकी रक्षा और प्रतिरक्षा करने वालों में भी सबसे आगे आ गए।

अल्लाह के रसूल सल्ल० के आस-पास ख़ूनी लड़ाई

ठीक उस वक़्त जबकि इस्लामी फ़ौज घेरे में आकर मुश्रिकों की चक्की के दो पाटों में पिस रही थी, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास भी ख़ूनी लड़ाई चल रही थी। हम बता चुके हैं कि मुश्रिकों ने घेराव की कार्रवाई शुरू की तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ नौ आदमी थे और जब आपने मुसलमानों को यह कहकर पुकारा कि आओ, मेरी ओर आओ, मैं अल्लाह का रसूल हूं, तो आपकी आवाज़ मुश्रिकों ने सुन ली और आपको पहचान लिया। (क्योंकि उस वक़्त वे मुसलमानों से भी ज़्यादा आपके क़रीब थे) चुनांचे उन्होंने झपट कर आप पर हमला कर दिया और किसी मुसलमान के आने से पहले-पहले अपना पूरा बोझ डाल दिया।

इस फ़ौरी हमले के नतीजे में इन मुश्रिकों और वहां पर मौजूद नौ सहाबा के बीच बड़ी घमासान की लड़ाई शुरू हो गई, जिसमें मुहब्बत, फ़िदाकारी और वीरता की बड़ी अनोखी घटनाएं घटीं।

सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उहुद के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सललम सात अंसार और दो क़ुरैशी

साथियों के साथ अलग-थलग रह गए थे। जब हमलावर आपके बिल्कुल क़रीब पहुंच गए, तो आपने फ़रमाया, 'कौन है जो इन्हें हम से दूर करे? ऐसे व्यक्ति के लिए जन्नत है।' या (यह फ़रमाया कि) 'वह जन्नत में मेरा साथी होगा।'

इसके बाद एक अंसारी सहाबी आगे बढ़े और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। इसके बाद फिर मुश्रिक आपके बिल्कुल क़रीब आ गए और फिर यही हुआ। इस तरह बारी-बारी सातों अंसारी सहाबी शहीद हो गए। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दो बाक़ी साथियों यानी क़ुरैशियों से फ़रमाया, हमने अपने साथियों से इंसाफ़ नहीं किया।[1]

इन सातों में से आख़िरी सहाबी हज़रत अम्मारा बिन यज़ीद बिन सुक्न थे। वह लड़ते रहे, लड़ते रहे, यहां तक कि घावों से चूर होकर गिर पड़े।[2]

इब्ने सुक्न के गिरने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ दोनों क़ुरैशी सहाबी रह गए थे।

चुनांचे बुख़ारी-मुस्लिम दोनों में अबू उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान रिवायत किया गया है कि जिन दिनों में आपने लड़ाइयां लड़ी हैं, उनमें से एक लड़ाई में आपके साथ तलहा बिन उबैदुल्लाह और साद बिन वक़्क़ास के सिवा कोई न रह गया था।[3]

यह क्षण अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन का बड़ा ही नाज़ुक क्षण था, जबकि मुश्रिकों के लिए बड़ा ही सुनहरा मौक़ा था और यह भी सच है कि मुश्रिकों ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाने में कोई कोताही नहीं की। उन्होंने अपना ताबड़ तोड़ हमला नबी सल्ल० पर बनाए रखा और चाहा कि आपका काम तमाम कर दें।

इसी हमले में उत्बा बिन अबी वक़्क़ास ने आपको पत्थर मारा, जिससे आप

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा उहुद 2/107
2. थोड़ी देर बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सहाबा किराम की एक टीम आ गई। उन्होंने कुफ़्फ़ार को हज़रत अम्मारा से पीछे धकेला और उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब ले गए। आपने उन्हें अपने पांवों पर टेक लिया और उन्होंने इस हालत में दम तोड़ दिया कि उनका गाल अल्लाह के रसूल सल्ल० के पांव पर था। (इब्ने हिशाम 2/81) गोया यह आरज़ू हक़ीक़त बन गई कि—

   निकल जाए दम तेरे क़दमों के 'ऊपर' यही दिल की हसरत, यही आरज़ू है।
3. सहीह बुख़ारी 1/527, 2/581

पहलू के बल गिर गए। आपका दाहिना निचला रुबाई[1] दांत टूट गया और आपका निचला होंठ ज़ख़्मी हो गया।

अब्दुल्लाह बिन शिहाब ज़ोहरी ने आगे बढ़कर आपकी पेशानी (माथा) घायल कर दिया। एक और अड़ियल सवार अब्दुल्लाह बिन क़ुम्मा ने लपक कर आपके कंधे पर ऐसी ज़ोरदार तलवार मारी कि एक महीने से ज़्यादा दिनों तक उसकी तक्लीफ़ महसूस करते रहे। अलबत्ता आपका दोहरा कवच न कट सका।

इसके बाद उसने पहले की तरह फिर एक ज़ोरदार तलवार मारी, जो आंख से नीचे की उभरी हुई हड्डी पर लगी और उसकी वजह से ख़ूद[2] की दो कड़ियां चेहरे के अन्दर धंस गईं। साथ ही उसने कहा, 'मैं क़ुम्मा (तोड़ने वाले) का बेटा हूं।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नं चेहरे से ख़ून पोंछते हुए फ़रमाया, अल्लाह तुझे तोड़ डाले।[3]

सहीह बुख़ारी में रिवायत है कि आपका रुबाई दांत तोड़ दिया गया और सर चोटीला कर दिया गया। उस वक़्त आप अपने चेहरे से ख़ून पोंछते जा रहे थे और कहते जा रहे थे, वह क़ौम कैसे कामियाब हो सकती है, जिसने अपने नबी के चेहरे को घायल कर दिया और उसका दांत तोड़ दिया, हालांकि वह उन्हें अल्लाह की ओर दावत दे रहा था। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'आपको कोई अख़्तियार नहीं, अल्लाह चाहे तो इन्हें तौफ़ीक़ दे और चाहे तो अज़ाब दे कि वे ज़ालिम हैं।'[4]

---

1. मुंह के बिल्कुल बीचोंबीच ऊपर के दो-दो दांत सनाया कहलाते हैं और इनके दाएं-बाएं, नीचे-ऊपर के एक-एक दांत रुबाई कहलाते हैं, जो किचली के नोकीले दांत से पहले होते हैं।
2. लोहे या पत्थर की टोपी जिसे लड़ाई में सर और चेहरे की हिफ़ाज़त के लिए ओढ़ा जाता है।
3. अल्लाह ने आपकी यह दुआ सुन ली। चुनांचे इब्ने आइज़ से रिवायत है कि इब्ने क़ुम्मा लड़ाई से घर वापस जाने के बाद अपनी बकरियां देखने के लिए निकला तो ये बकरियां पहाड़ की चोटी पर मिलीं। यह व्यक्ति वहां पहुंचा तो एक पहाड़ी बकरी ने हमला कर दिया और सींग मार-मार कर पहाड़ की ऊंचाई से नीचे लुढ़का दिया (फ़त्हुल बारी 7/373) और तबरानी की रिवायत है कि अल्लाह ने उस पर एक पहाड़ी बकरा मुसल्लत कर दिया जिसने सींग मार-मारकर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। (फ़त्हुल बारी 7/366)
4. सहीह बुख़ारी 2/582, सहीह मुस्लिम 2/108

तबरानी की रिवायत है कि आपने उस दिन फ़रमाया—

'उस क़ौम पर अल्लाह का सख़्त अज़ाब हो, जिसने अपने पैग़म्बर का चेहरा ख़ून से भर दिया, फिर थोड़ी देर रुक कर फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को बख़्श दे। वह नहीं जानती।'[1]

सहीह मुस्लिम की रिवायत में भी यही है कि आप बार-बार कह रहे थे—

'ऐ पालनहार ! मेरी क़ौम को बख़्श दे, वह नहीं जानती।'[2]

क़ाज़ी अयाज़ की शिफ़ा में ये शब्द हैं—

'ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को हिदायत दे, वह नहीं जानती।'[3]

इसमें सन्देह नहीं कि मुश्रिक आपका काम तमाम कर देना चाहते थे, मगर दोनों क़ुरैशी सहाबा यानी हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बेमिसाल जांबाज़ी और अपूर्व वीरता से काम लेकर सिर्फ़ दो होते हुए भी मुश्रिकों की कामियाबी नामुम्किन बना दी। ये दोनों अरब के सबसे माहिर तीरंदाज़ थे। उन्होंने तीर मार-मारकर मुश्रिक हमलावरों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से परे रखा।

जहां तक साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का ताल्लुक़ है तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने तीरकश के सारे तीर इनके लिए बिखेर दिए और फ़रमाया—

'चलाओ, तुम पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों।'[4]

उनकी योग्यताओं का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके सिवा किसी और के लिए मां-बाप के फिदा होने की बात नहीं कही।[5]

और जहां तक हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु का ताल्लुक़ है, तो उनके कारनामे का अन्दाज़ा नसई की एक रिवायत से लगाया जा सकता है, जिसमें हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुश्रिकों के उस वक़्त के हमले का उल्लेख किया है, जब आप

---

1. फ़त्हुल बारी 7/373
2. सहीह मस्लिम, बाब ग़ज़वा उहुद 2/108
3. किताबुश-शिफ़ा ब-तारीफ़े हुक़ूक़ुल मुस्तफ़ा 1/81
4. सहीह बुख़ारी 1/407, 2/580, 581
5. सहीह बुख़ारी 1/407, 2/580, 581

अन्सार की थोड़ी-सी नफ़री के साथ तशरीफ़ रखते थे।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० को जा लिया तो आपने फ़रमाया, कौन है जो इनसे निमटे ?

हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा, मैं।

इसके बाद हज़रत जाबिर रज़ि० ने अंसार के आगे बढ़ने और एक-एक करके शहीद होने का वह विवरण दिया है जिसे हम सहीह मुस्लिम के हवाले से बयान कर चुके हैं। हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब ये सब शहीद हो गए तो हज़रत तलहा आगे बढ़े और ग्यारह आदमियों के बराबर तंहा लड़ाई की, यहां तक कि उनके हाथ पर तलवार की एक ऐसी चोट लगी जिससे उनकी उंगलियां कट गईं। इस पर उनके मुंह से आवाज़ निकली 'हिस' (सी)

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम बिस्मिल्लाह कहते तो तुम्हें फ़रिश्ते उठा लेते और लोग देखते।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि फिर अल्लाह ने मुश्रिकों को पलटा दिया।[1]

अक्लील में हाकिम की रिवायत है कि उन्हें उहुद के दिन 39 या 35 घाव आए और उनकी बिचली और शहादत की उंगलियां शल हो गईं।[2]

इमाम बुख़ारी ने क़ैस बिन अबी हाज़िम से रिवायत की है कि उन्होंने कहा, मैंने हज़रत तलहा का हाथ देखा कि वह शल था। उससे उहुद के दिन उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बचाया था।[3]

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में उस दिन फ़रमाया, जो व्यक्ति किसी शहीद को धरती पर चलता हुआ देखना चाहे, वह तलहा बिन उबैदुल्लाह को देख ले।[4]

और अबू दाऊद त्यालसी ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जब उहुद की लड़ाई का उल्लेख करते तो कहते कि यह लड़ाई पूरी की पूरी तलहा के लिए थी।[5] (यानी इसमें नबी सल्ल० की सुरक्षा का असल कारनामा उन्हीं ने अंजाम दिया था।)

---

1. फ़त्हुल बारी 7/361, सुनने नसई 2/52-53
2. फ़त्हुल बारी 7/361
3. सहीह बुख़ारी 1/527, 581
4. तिर्मिज़ी : मनाक़िब, हदीस न० 3740, इब्ने माजा, मुक़दमा हदीस न० 125
5. फ़त्हुल बारी 7/361

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने उनके बारे में यह भी कहा—

'ऐ तलहा बिन उबैदुल्लाह! तुम्हारे लिए जन्नतें वाजिब हो गईं और तुमने अपने यहां बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूर का ठिकाना बना लिया।'[1]

ऐसे ही सबसे नाज़ुक और सबसे कठिन क्षण में अल्लाह ने ग़ैब से अपनी मदद फ़रमाई। चुनांचे मुस्लिम व बुख़ारी में हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उहुद के दिन देखा, आपके साथ दो आदमी थे, सफ़ेद कपड़े पहने हुए। ये दोनों आपकी ओर से बड़ी ज़ोरदार लड़ाई लड़ रहे थे। मैंने इससे पहले और इसके बाद इन दोनों को कभी नहीं देखा।

एक और रिवायत में है कि ये दोनों हज़रत जिब्रील और हज़रत मीकाईल थे।[2]

अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास सहाबा के इकट्ठा होने की शुरूआत

यह सारी घटना कुछ ही क्षणों में बिल्कुल अचानक और बड़ी तेज़ रफ़्तारी से घटी, वरना नबी सल्ल० के चुने हुए सहाबा किराम जो लड़ाई के दौरान पहली पंक्ति में थे, लड़ाई की स्थिति को बदलते ही या नबी सल्ल० की आवाज़ सुनते ही आपकी ओर बेतहाशा दौड़ कर आए कि कहीं आपको कोई अप्रिय घटना का सामना न करना पड़ जाए।

मगर ये लोग पहुंचे तो प्यारे नबी सल्ल० ज़ख़्मी हो चुके थे। छः अंसारी शहीद हो चुके थे, सातवें घायल होकर गिर चुके थे और हज़रत साद और हज़रत तलहा रज़ि० जान तोड़ कर प्रतिरक्षा कर रहे थे।

इन लोगों ने पहुंचते ही अपने जिस्मों और हथियारों से नबी सल्ल० के चारों ओर एक बाड़ तैयार कर दी और दुश्मन के ताबड़ तोड़ हमलों को रोकने में बड़ी वीरता से काम लिया। लड़ाई की पंक्ति से पलट कर आने वाले सबसे पहले सहाबी आपके ग़ार के साथी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

इब्ने हब्बान ने अपनी सहीह में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उहुद के दिन सारे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पलट गए थे, (यानी रक्षकों के अलावा तमाम

---

1. मुख़्तसर तारीख़े दमिश्क़ 7/82,
2. सहीह बुख़ारी, 2/580, अल-मुस्लिम : फ़ज़ाइल हदीस न० 46, 47 (4/1802)

सहाबा आपको आपके ठहरने की जगह पर छोड़कर लड़ाई की अगली पंक्तियों में चले गए थे, फिर घेराव की घटना के बाद) मैं पहला व्यक्ति था, जो नबी सल्ल० के पास पलट कर आया। देखा तो आपके सामने एक आदमी था, जो आपकी ओर से लड़ रहा था और आपको बचा रहा था। मैंने (जी ही जी में) कहा, तुम तलहा हो, तुम पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों, तुम तलहा हो, तुम पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों।' (चूंकि मुझसे यह क्षण फ़ौत हो गया था, इसलिए मैंने कहा कि मेरी क़ौम ही का एक आदमी हो, तो यह ज़्यादा पसन्दीदा बात है।)[1]

इतने में अबू उबैदा बिन जर्राह मेरे पास आ गए, वह इस तरह दौड़ रहे थे, मानो चिड़िया (उड़ रही) है, यहां तक कि मुझसे आ मिले। अब हम दोनों नबी सल्ल० की ओर दौड़े। देखा, तो आपके आगे तलहा बिछे पड़े हैं।

आपने फ़रमाया, अपने भाई को संभालो, इसने जन्नत वाजिब कर ली।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का बयान है कि (हम पहुंचे तो) नबी सल्ल० का मुबारक चेहरा ज़ख़्मी हो चुका था और ख़ूद की दो कड़ियां आंख के नीचे गालों में धंस चुकी थीं। मैंने उन्हें निकालना चाहा, तो अबू उबैदा ने कहा, ख़ुदा का वास्ता है, मुझे निकालने दीजिए।

इसके बाद उन्होंने मुंह से एक कड़ी पकड़ी और धीरे-धीरे निकालनी शुरू की, ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा न पहुंचे और आख़िरकार एक कड़ी अपने मुंह से खींच कर निकाल दी। लेकिन (इस कोशिश में) उनका एक निचला दांत गिर गया।

अब दूसरी मैंने खींचनी चाही, तो अबू उबैदा ने फिर कहा, अबूबक्र! ख़ुदा का वास्ता देता हूं, मुझे खींचने दीजिए। इसके बाद दूसरी भी धीरे-धीरे खींची, लेकिन उनका दूसरा निचला दांत भी गिर गया।

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अपने भाई तलहा को संभालो। (उसने जन्नत) वाजिब कर ली।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अब हम तलहा की ओर फिरे और उन्हें संभाला, उनको दस से ज़्यादा घाव लग चुके थे।[2] तहज़ीब तारीख़ दमिश्क़ में है कि हम उनके पास कुछ क्षणो में आए तो क्या देखते हैं कि उन्हें नेज़े, तीर और तलवार के कम व बेश साठ घाव लगे हुए हैं और उनकी

---

1. तहज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 7/77, तलहा बिन उबैदुल्लाह भी हज़रत अबूबक्र के क़बीला बनू तीम से थे।
2. ज़ादुल मआद 2/95

उंगली कट गई है। हमने किसी हद तक उनका हाल ठीक किया।[1] (इससे भी अन्दाज़ा होता है कि हज़रत तलहा ने उस दिन प्रतिरक्षा और लड़ाई में कैसी जांबाज़ी और बे-जिगरी से काम लिया था।)

फिर इन्हीं सबसे नाज़ुक क्षणों के दौरान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास जांबाज़ सहाबा की एक टीम भी आ पहुंची, जिनके नाम ये हैं—

1. अबु दुजाना, 2. मुसअब बिन उमैर, 3. अली बिन अबी तालिब, 4. सहल बिन हुनैफ़, 5. मालिक बिन सिनान (अबू सईद ख़ुदरी के पिता), 6. उम्मे अम्मारा नुसैबा बिन्त काब माज़िनीया, 7. क़तादा बिन नोमान; 8. उमर बिन ख़त्ताब, 9. हातिब बिन अबी बलतआ, और 10. अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन०

ये लोग कैसे-कैसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचे होंगे, इसका एक हल्का-सा अन्दाज़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इस बयान से हो सकता है कि उहुद के दिन जब लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हताश हो गए तो मैंने क़त्ल किए हुए लोगों में देखा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नज़र न आए। मैंने जी में कहा, अल्लाह की क़सम! आप भाग नहीं सकते और क़त्ल किए गए लोगों में आपको देख नहीं रहा हूं, इसलिए मैं समझता हूं कि हमने जो कुछ किया है, उससे अल्लाह ने ग़ज़बनाक होकर अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उठा लिया है। इसलिए मेरे लिए इससे बेहतर कोई शक्ल नहीं कि लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊं। फिर क्या था मैंने तलवार की म्यान तोड़ दी और क़ुरैश पर इस ज़ोर का हमला किया कि उन्होंने जगह ख़ाली कर दी। अब क्या देखता हूं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके दर्मियान (घेरे में) मौजूद हैं।[2]

मुश्रिकों के दबाव में बढ़ौत्तरी

इधर मुश्रिकों की तायदाद भी हर क्षण बढ़ती जा रही थी, जिसके नतीजे में उनके हमले बड़े सख़्त होते जा रहे थे और उनका दबाव बढ़ता जा रहा था, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन कुछ गढ़ों में से एक गढ़े में जा गिरे, जिन्हें अबू आमिर फ़ासिक़ ने इस क़िस्म की शरारत के लिए

---

1. तह्ज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 7/78
2. मुस्नद अबी याला 1/416, हदीस न० 546,

खोद रखा था, और उसके नतीजे में आपका घुटना मोच खा गया।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने आपका हाल थामा और तलहा बिन उबैदुल्लाह ने (जो ख़ुद भी घावों से चूर थे) आपको गोद में लिया, तब आप बराबर खड़े हो सके।

नाफ़ेअ बिन जुबैर कहते हैं, मैंने एक मुहाजिर सहाबी को सुना, फ़रमा रहे थे, मैं उहुद की लड़ाई में हाज़िर था। मैंने देखा कि हर ओर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तीर बरस रहे हैं और आप तीरों के बीच में हैं, लेकिन सारे तीर आपसे फेर दिए जाते हैं। (यानी आगे घेरा डाले हुए सहाबा उन्हें रोक लेते थे) और मैंने देखा कि अब्दुल्लाह बिन शिहाब ज़ोहरी कह रहा था, मुझे बताओ, मुहम्मद कहां है? अब या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा?

हालांकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बाज़ू में थे। आपके साथ कोई भी न था, फिर वह आपसे आगे निकल गया। इस पर सफ़वान ने उसे मलामत की।

जवाब में उसने कहा, ख़ुदा की क़सम! मैंने उसे देखा ही नहीं। ख़ुदा की क़सम! वह हमसे सुरक्षित कर दिया गया है। इसके बाद हम चार आदमी यह संकल्प लेकर चले कि उन्हें क़त्ल कर देंगे, लेकिन उन तक न पहुंच सके।[1]

अपूर्व वीरता

बहरहाल इस मौक़े पर मुसलमानों ने ऐसी अपूर्व वीरता दिखाई और ज़बरदस्त क़ुर्बानियों से काम लिया, जिसकी मिसाल तारीख़ में नहीं मिलती। चुनांचे अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे ढाल बना लिया। वह अपना सीना ऊपर उठा लिया करते थे, ताकि आपको दुश्मन के तीरों से सुरक्षित रख सकें।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि उहुद के दिन लोग (यानी आम मुसलमान) हार कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास (आने के बजाए इधर-उधर) भाग गए और अबू तलहा आपके आगे अपनी एक ढाल लेकर सपर बन गए। वह माहिर तीरंदाज़ थे, बहुत खींच कर तीर चलाते थे, चुनांचे उस दिन दो या तीन कमानें तोड़ डालीं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से कोई आदमी तीरों का तिरकश लिए गुज़रता तो आप फ़रमाते कि इन्हें अबू तलहा के लिए बिखेर दो।

---

1. ज़ादुल मआद 2/97

नबी सल्ल० क़ौम की ओर सर उठा कर देखते तो अबू तलहा कहते, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान! आप सर उठा कर न झांकें। आपको क़ौम का कोई तीर न लग जाए। मेरा सीना आपके सीने के आगे है।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिवायत भी है कि हज़रत अबू तलहा नबी सल्ल० समेत एक ही ढाल से बचाव कर रहे थे और अबू तलहा बहुत अच्छे तीरंदाज़ थे। जब वह तीर चलाते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गरदन उठा कर देखते कि उनका तीर कहां गिरा?[2]

हज़रत अबू दुजाना रज़ि०-नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे खड़े हो गए और अपनी पीठ को आपके लिए ढाल बना दिया, उन पर तीर पड़ रहे थे, लेकिन वह हिलते न थे।

हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ ने उत्बा बिन अबी वक़्क़ास का पीछा किया, जिसने नबी सल्ल० का मुबारक दांत शहीद किया था और उसे इस ज़ोर से तलवार मारी कि उसका सर छटक गया। फिर उसके घोड़े और तलवार पर क़ब्ज़ा कर लिया।

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० बहुत ज़्यादा चाहते थे कि अपने उस भाई, उत्बा को क़त्ल करें, पर वह सफल न हो सके, बल्कि यह सौभाग्य तो हज़रत हातिब को मिलना था और मिला।

हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ भी बड़े जांबाज़ तीरंदाज़ थे। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम से मौत पर बैअत की और इसके बाद मुश्रिकों को बड़ी वीरता के साथ दूर ही रखा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद भी तीर चला रहे थे। चुनांचे हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी कमान से इतने तीर चलाए कि उसका किनारा टूट गया। फिर उस कमान को हज़रत क़तादा बिन नोमान ने ले लिया और वह उन्हीं के पास रही।

उस दिन यह घटना भी घटी कि हज़रत क़तादा की आंख चोट खाकर चेहरे पर ढलक आई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे अपने हाथ से पपोटे के अन्दर दाख़िल कर दिया। इसके बाद इनकी दोनों आंखों में यही ज़्यादा ख़ूबसूरत लगती थी और इसी की रोशनी ज़्यादा तेज़ थी।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/581
2. सहीह बुख़ारी 1/406

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने लड़ते-लड़ते मुंह में चोट खाई, जिससे उनके सामने का दांत टूट गया और उन्हें बीस या बीस से ज़्यादा घाव लगे, जिनमें से कुछ घाव पांव में लगे और वह लंगड़े हो गए।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता मालिक बिन सिनान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे से ख़ून चूस कर साफ़ किया। आपने फ़रमाया, इसे थूक दो।

उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम! इसे तो मैं हरगिज़ न थूकूंगा। इसके बाद पलट कर लड़ने लगे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो व्यक्ति किसी जन्नती आदमी को देखना चाहता है, वह इन्हें देखे। इसके बाद वह लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

एक अनोखा कारनामा महिला साथी हज़रत उम्मे अम्मारा नसीबा बिन्त काब रज़ि० ने अंजाम दिया। वह कुछ मुसलमानों के बीच लड़ती हुई इब्ने क़ुम्मा के सामने अड़ गईं। इब्ने क़ुम्मा ने उनके कंधे पर ऐसी तलवार मारी कि गहरा घाव हो गया। उन्होंने भी इब्ने क़ुम्मा को अपनी तलवार से कई चोटें मारीं, मगर कमबख़्त दो कवचें पहने हुए था, इसलिए बच गया।

हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ि० ने लड़ते-भिड़ते बारह घाव खाए।

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० ने भी लड़ाई में बड़ी वीरता से हिस्सा लिया। वे इब्ने क़ुम्मा और उसके साथियों के ताबड़ तोड़ हमलों से अल्लाह के रसूल सल्ल० की बराबर रक्षा किए जा रहे थे। उन्हीं के हाथ में इस्लामी फ़ौज का झंडा था। ज़ालिमों ने उनके दाहिने हाथ पर इस ज़ोर की तलवार मारी कि हाथ कट गया। इसके बाद उन्होंने बाएं हाथ में झंडा थाम लिया और मुक़ाबला करते रहे। आख़िरकार उनका बायां हाथ भी काट दिया गया। इसके बाद उन्होंने झंडे पर घुटने टेक कर उसे सीने और गरदन के सहारे लहराए रखा और इसी हाल में शहीद कर दिए गए।

उनका क़ातिल इब्ने क़ुम्मा था। वह समझ रहा था कि वह मुहम्मद है, क्योंकि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० आपसे मिलते-जुलते थे। चुनांचे वह मुसअब बिन उमैर रज़ि० को शहीद करके मुश्रिकों की ओर वापस चला गया और चिल्ला-चिल्लाकर एलान किया कि मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए।[1]

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 2/73, 80-83, ज़ादुल मआद 2/97

नबी सल्ल० की शहादत की ख़बर का प्रभाव लड़ाई पर

उसके इस एलान से नबी सल्ल० की शहादत की ख़बर मुसलमानों और मुश्रिकों दोनों में फैल गई और यही वह नाज़ुक घड़ी थी, जिसमें अल्लाह के रसूल सल्ल० से अलग-थलग घेरे में आए हुए बहुत से सहाबा किराम के हौसले टूट गए। उनके इरादे ठंडे पड़ गए और उनकी लाइनें उथल-पुथल और बिखराव का शिकार हो गईं।

मगर आपकी शहादत की यही ख़बर इस हैसियत से फ़ायदेमंद साबित हुई कि इसके बाद मुश्रिकों के जोश भरे हमले में कुछ कमी आ गई, क्योंकि वे महसूस कर रहे थे कि उनका आख़िरी मक़्सद पूरा हो चुका है। चुनांचे अब बहुत से मुश्रिकों ने हमला बन्द करके मुसलमान शहीदों की लाशों का मुसला (विकृत) करना शुरू कर दिया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० की लगातार जद्दोजेहद से हालात पर क़ाबू पा लिया गया

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० की शहादत के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया। उन्होंने जमकर लड़ाई की। वहां पर मौजूद बाक़ी सहाबा किराम ने भी अपूर्व वीरता का परिचय दिया, जमकर मुक़ाबला भी किया और हमला भी, जिससे आख़िरकार इस बात की संभावना पैदा हो गई कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मुश्रिकों की सफ़ें चीर कर घेरे में आए हुए सहाबा किराम की ओर रास्ता बनाएं।

चुनांचे आपने क़दम आगे बढ़ाया और सहाबा किराम की ओर तशरीफ़ ले गए।

सबसे पहले हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० ने आपको पहचाना, ख़ुशी से चीख़ पड़े, मुसलमानो ख़ुश हो जाओ, यह हैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!

आपने इशारा फ़रमाया कि ख़ामोश रहो, ताकि मुश्रिकों को आपकी मौजूदगी और मौजूद होने की जगह का पता न लग सके। मगर उनकी आवाज़ मुसलमानों के कान तक पहुंच चुकी थी। चुनांचे मुसलमान आपकी पनाह में आना शुरू हो गए और धीरे-धीरे लगभग तीस सहाबा जमा हो गए।

जब इतनी तायदाद जमा हो गई, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहाड़ की घाटी यानी कैम्प की तरफ़ हटना शुरू किया, मगर चूंकि इस

वापसी का अर्थ यह था कि मुश्रिकों ने मुसलमानों को घेरे में लेने की जो कार्रवाई की थी, वह विफल हो जाए इसलिए मुश्रिकों ने इस वापसी को नाकाम बनाने के लिए अपने ताबड़-तोड़ हमले जारी रखे, मगर आपने इन हमलावरों की भीड़ चीर कर रास्ता बना ही लिया और इस्लाम के शेरों की बहादुरी के सामने उनकी एक न चली।

इसी बीच मुश्रिकों का एक अड़ियल घुड़सवार उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरह यह कहते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर आगे बढ़ा कि या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी दो-दो हाथ करने के लिए ठहर गए, पर मुक़ाबले की नौबत न आई, क्योंकि उसका घोड़ा एक गढ़े में गिर गया।

इतने में हारिस बिन सुम्मा ने उसके पास पहुंचकर उसे ललकारा और उसके पांव पर इस ज़ोर की तलवार मारी कि वहीं बिठा दिया। फिर उसका काम तमाम करके उसका हथियार ले लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आ गए।

पर इतने में मक्की फ़ौज के एक दूसरे सवार अब्दुल्लाह बिन जाबिर ने पलटकर हज़रत हारिस बिन सुम्मा पर हमला कर दिया और उनके कंधे पर तलवार मारकर घायल कर दिया, पर मुसलमानों ने लपककर उन्हें उठा लिया।

उधर ख़तरों से खेलने वाले मर्द मुजाहिद हज़रत अबु दुजाना रज़ि०, जिन्होंने आज लाल पट्टी बांध रखी थी, अब्दुल्लाह बिन जाबिर पर टूट पड़े और उसे ऐसी तलवार मारी कि उसका सर उड़ गया।

प्रकृति का चमत्कार देखिए कि इसी ख़ूनी मार-धाड़ के दौरान मुसलमानों को नींद की झपकियां भी आ रही थीं और जैसा कि क़ुरआन ने बताया है, यह अल्लाह की ओर से शान्ति थी।

अबू तलहा का बयान है कि मैं भी उन लोगों में था जिन पर उहुद के दिन नींद छा रही थी, यहां तक कि मेरे हाथ से कई बार तलवार गिर गई। हालत यह थी कि वह गिरती थी और मैं पकड़ता था, फिर गिरती थी और फिर पकड़ता था।[1]

सार यह कि इस तरह की जांबाज़ी और बहादुरी के साथ यह दस्ता संगठित रूप से पीछे हटता हुआ पहाड़ की घाटी में स्थित कैम्प तक जा पहुंचा और बाक़ी सेना के लिए भी उस सुरक्षित स्थान पर पहुंचने का रास्ता बना दिया।

---

1. सहीह बुख़ारी 8/582

चुनांचे बाक़ी फ़ौज भी अब आपके पास आ गई और ख़ालिद बिन वलीद की रणनीति अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रणनीति के सामने नाकाम हो गई।

उबई बिन ख़ल्फ़ का क़त्ल

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घाटी में तशरीफ़ ला चुके तो उबई बिन ख़ल्फ़ यह कहता हुआ आया कि मुहम्मद कहां है? या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा।

सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या हममें से कोई उस पर हमला कर दे?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसे आने दो।

जब क़रीब आया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन सुम्मा से एक छोटा-सा नेज़ा लिया और लेने के बाद झटका दिया तो इस तरह लोग इधर-उधर उड़ गए, जैसे ऊंट अपने बदन को झटका देता है, तो मक्खियां उड़ जाती हैं। इसके बाद आप उसके मुक़ाबले में पहुंच गए। उसकी ख़ूद (कड़ी) और ज़िरह (कवच) के बीच हलक़ के पास थोड़ी-सी जगह खुली दिखाई दी।

आपने उसी पर टिका कर ऐसा नेज़ा मारा कि वह घोड़े से कई बार लुढ़क लुढ़क गया। जब क़ुरैश के पास गया (हाल यह था कि गरदन में कोई बड़ी खरोंच न थी, अलबत्ता ख़ून बन्द था और बहता न था) तो कहने लगा, ख़ुदा की क़सम ! मुझे मुहम्मद ने क़त्ल कर दिया।

लोगों ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारा दिल चला गया है, वरना तुम्हें कोई ख़ास चोट नहीं है।

उसने कहा, वह मक्के में मुझसे कह चुका था कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा[1], इसलिए ख़ुदा की क़सम ! अगर वह मुझ पर थूक देता, तो भी मेरी जान चली जाती। आख़िरकार अल्लाह का वह दुश्मन मक्का वापस होते हुए सर्फ़ नामी

---

1. यह घटना इस तरह है कि जब मक्का में उबई की मुलाक़ात अल्लाह के रसूल सल्ल० से होती, तो वह आपसे कहता, ऐ मुहम्मद ! मेरे पास औस नामी एक घोड़ा है। मैं उसे हर दिन तीन साअ (7 $\frac{1}{2}$ किलो) दाना खिलाता हूं। उसी पर बैठकर तुम्हें क़त्ल करूंगा। जवाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते, 'बल्कि इनशाअल्लाह मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा।'

जगह पर पहुंचकर मर गया।[1]

अबुल अस्वद ने हज़रत उर्वः से रिवायत की है कि यह बैल की तरह आवाज़ निकालता था और कहता था, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, जो तक्लीफ़ मुझे है, अगर वह ज़िल मजाज़ के सारे लोगों को होती, तो वे सबके सब मर जाते।[2]

हज़रत तलहा रज़ि० नबी सल्ल० को उठाते हैं

पहाड़ की ओर नबी सल्ल० की वापसी के दौरान एक चट्टान पड़ गई। आपने उस पर चढ़ने की कोशिश की, मगर चढ़ न सके, क्योंकि एक तो आपका जिस्म भारी हो चुका था, दूसरे आपने दोहरा कवच पहन रखा था और फिर आपको सख़्त चोटें भी आई थीं। इसलिए हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० नीचे बैठ गए और आपको सवार करके खड़े हो गए। इस तरह आप चट्टान पर पहुंच गए। आपने फ़रमाया, 'तलहा ने (जन्नत) वाजिब कर ली।'[3]

मुश्रिकों का आख़िरी हमला

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घाटी के अन्दर अपनी क़ियादतगाह (कमांडिंग रूम) में पहुंच गए, तो मुश्रिकों ने मुसलमानों को आख़िरी नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि इस बीच कि अल्लाह के रसूल सल्ल० घाटी के अन्दर ही तशरीफ़ रखते थे, अबू सुफ़ियान और ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में मुश्रिकों का एक दस्ता चढ़ आया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! ये हमसे ऊपर न जाने पाएं।

फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० और मुहाजिरों की एक टीम ने लड़कर उन्हें पहाड़ से नीचे उतार दिया।[4]

मग़ाज़ी उमवी का बयान है कि मुश्रिक पहाड़ पर चढ़ आए तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत साद रज़ि० से फ़रमाया, 'इनके हौसले पस्त करो।' (यानी

---

1. इब्ने हिशाम 2/84, ज़ादुल मआद 2/97
2. मुस्तदरक हाकिम 2/327
3. इब्ने हिशाम 2/86, तिर्मिज़ी हदीस न० 1693, (जिहाद) 3739 (मनाक़िब) मुस्नद अहमद 1/165, हाकिम ने (3/374 में) इसे सही कहा है और ज़हबी ने इसकी ताईद की है।
4. इब्ने हिशाम 2/86

इन्हें पीछे धकेल दो)

उन्होंने कहा, मैं अकेले इनके हौसले कैसे पस्त करूं ?

इस पर आपने तीन बार यही बात दोहराई।

आख़िरकार हज़रत साद रज़ि० ने अपने तिरकश से एक तीर निकाला और एक व्यक्ति को मारा तो वह वहीं ढेर हो गया।

हज़रत साद कहते हैं कि मैंने फिर अपना तीर लिया, उसे पहचानता था और उससे दूसरे को मारा, तो उसका भी काम तमाम हो गया।

इसके बाद फिर तीर लिया, उसे पहचानता था और उससे एक तीसरे को मारा तो उसकी भी जान जाती रही।

इसके बाद मुश्रिक नीचे उतर आए। मैंने कहा यह मुबारक तीर है। फिर मैंने उसे अपने तिरकश में रख लिया। यह तीर ज़िंदगी भर हज़रत साद के पास रहा और उनके बाद उनकी औलाद के पास रहा।[1]

शुहीदों का मुसला

यह आख़िरी हमला था, जो मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ किया था, चूंकि आपके बारे में यही मालूम न था, बल्कि आपके शहीद किए जाने का लगभग यक़ीन था, इसलिए उन्होंने अपने कैम्प की ओर पलट कर मक्का वापसी की तैयारी शुरू कर दी। कुछ मुश्रिक मर्द और औरतें मुसलमान शुहीदों के मुसले में लग गए, यानी शहीदों की शर्मगाहें और कान, नाक वग़ैरह काट लिए, पेट चीर दिए।

हिन्द बिन्त उत्बा ने हज़रत हमज़ा रज़ि० का कलेजा चाक कर दिया और मुंह में डाल कर चबाया। निगलना चाहा, लेकिन निगल न सकी, तो थूक दिया और कटे हुए कानों और नाकों का पाज़ेब और हार बनाया।[2]

आख़िर तक लड़ने के लिए मुसलमानों की मुस्तैदी

फिर इस आखिरी वक़्त में दो ऐसी घटनाएं हुईं जिनसे यह अन्दाज़ा लगाना कठिन नहीं है कि जांबाज़ व सरफ़रोश मुसलमान आख़िर तक लड़ाई लड़ने के लिए कितने मुस्तैद थे और अल्लाह की राह में जान देने का कैसा हौसला रखते थे—

---

1. ज़ादुल मआद 2/95
2. इब्ने हिशाम 2/90

1. हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० का बयान है कि मैं उन मुसलमानों में था जो घाटी से बाहर आए थे। मैंने देखा कि मुश्रिकों के हाथों मुसलमान शहीदों का मुसला किया जा रहा है, तो रुक गया। फिर आगे बढ़ा, क्या देखता हूं कि एक मुश्रिक जो भारी-भरकम कवच पहने शहीदों के बीच से गुज़र रहा है और कहता जा रहा है कि कटी हुई बकरियों की तरह ढेर हो गए और एक मुसलमान उसकी राह तक रहा है। वह भी कवच पहने हुए है।

मैं कुछ क़दम और बढ़कर उसके पीछे हो लिया, फिर खड़े होकर आंखों ही आंखों में काफ़िर और मुस्लिम को तौलने लगा। महसूस हुआ कि काफ़िर अपने डील-डोल और साज़ व सामान दोनों पहलुओं से बेहतर है। अब मैं दोनों का इन्तिज़ार करने लगा। आखिरकार दोनों में टक्कर हो गई और मुसलमान ने काफ़िर को ऐसी तलवार मारी कि वह पांव तक काटती चली गई। मुश्रिक दो टुकड़े होकर गिरा।

फिर मुसलमान ने अपना चेहरा खोला और कहा, ओ काब! कैसी रही? मैं अबू दुजाना हूं।[1]

2. लड़ाई के ख़ात्मे पर कुछ मुसलमान औरतें जिहाद के मैदान में पहुंचीं। चुनांचे हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि मैंने हज़रत आइशा बिन्त अबूबक्र रज़ि०और उम्मे सुलैम को देखा कि पिंडली के पाज़ेब तक कपड़े चढ़ाए पीठ पर मशक लाद-लादकर ला रही थीं और क़ौम के मुंह में उंडेल रही थीं।[2]

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि उहुद के दिन हज़रत उम्मे सलीत रज़ि० हमारे लिए मशक भर-भरकर ला रही थीं।[3]

इन्हीं औरतों में हज़रत उम्मे ऐमन भी थीं। उन्होंने जब हार खाए मुसलमानों को देखा कि मदीने में घुसना चाहते हैं, तो उनके चेहरों पर मिट्टी फेंकने लगीं और कहने लगीं, यह सूत कातने का तकला लो और हमें तलवार दो।[4]

इसके बाद तेज़ी से लड़ाई के मैदान में पहुंचीं और घायलों को पानी पिलाने

---

1. अल-बिदाया वन्निहाया 4/17
2. सहीह बुख़ारी 1/403, 2/581
3. सहीह बुख़ारी 1/403
4. सूत कातना औरतों का ख़ास काम था। इसलिए सूत कातने का तकला यानी फिरकी औरतों का वैसा ही ख़ास सामान था, जैसे हमारे देश में चूड़ी। इस मौक़े पर उक्त मुहावरे का ठीक वही अर्थ है जो हमारी भाषा के इस मुहावरे का है कि 'चूड़ी लो और तलवार दो'।

लगीं। इन पर हिबान बिन अरक़ा ने तीर चलाया। वह गिर पड़ीं और परदा खुल गया। इस पर अल्लाह के दुश्मन ने भरपूर ठट्ठा लगाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह बात बहुत बोझ महसूस हुई। आपने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को एक बेरेश तीर देकर फ़रमाया, इसे चलाओ।

हज़रत साद ने चलाया तो वह तीर हिबान के हलक़ पर लगा और वह चित गिरा। उसका परदा खुल गया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह हंसे कि जड़ के दांत दिखाई देने लगे। फ़रमाया, साद ने उम्मे ऐमन का बदला चुका लिया, अल्लाह उनकी दुआ क़ुबूल करे।[1]

घाटी में चैन मिलने के बाद

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घाटी के अन्दर अपनी जगह पर तनिक सुकून मिला, तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० महरास से अपनी ढाल में पानी भर लाए। (कहा जाता है कि महरास पत्थर में बना हुआ वह गढ़ा होता है, जिसमें ज़्यादा पानी आ सकता हो और कहा जाता है कि यह उहुद में एक चश्मे का नाम है।) बहरहाल हज़रत अली रज़ि० ने वह पानी नबी सल्ल० की ख़िदमत में पीने के लिए पेश किया।

आपने कुछ उसमें नागवार गंध महसूस की, इसलिए उसे पिया तो नहीं, अलबत्ता उससे चेहरे का ख़ून धो लिया और सर पर भी डाल लिया। इस हालत में आप फ़रमा रहे थे, उस व्यक्ति पर अल्लाह का बड़ा प्रकोप है, जिसने उसके नबी के चेहरे को ख़ून से भर दिया।[2]

हज़रत सह्ल रज़ि० फ़रमाते हैं, मुझे मालूम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घाव किसने धोया? पानी किसने बहाया? और इलाज किस चीज़ से किया? आपकी प्यारी बेटी आपका घाव धो रही थीं, हज़रत अली रज़ि० ढाल से पानी बहा रहे थे। जब हज़रत फ़ातिमा ने देखा कि पानी की वजह से ख़ून बढ़ता ही जा रहा है, तो चटाई का एक टुकड़ा लिया और उसे जलाकर चिपका दिया, जिससे ख़ून रुक गया।[3]

इधर हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु मीठा और स्वादिष्ट पानी

---

1. अस्सीरतुल हलबीया 2/22
2. इब्ने हिशाम 2/85
3. सहीह बुख़ारी 2/584

लाए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे पिया और दुआ दी।[1] घाव की वजह से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर की नमाज़ बैठे-बैठे पढ़ी और सहाबा किराम रज़ि० ने भी आपके पीछे बैठकर नमाज़ पढ़ी।[2]

अबू सुफ़ियान की बकवास और हज़रत उमर रज़ि० का जवाब

मुश्रिकों ने वापसी की तैयारी पूरी कर ली तो अबू सुफ़ियान उहुद पहाड़ पर नमूदार हुआ और ऊंची आवाज़ से बोला, क्या तुममें मुहम्मद हैं?

लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसने फिर कहा, क्या तुममें अबू क़हाफ़ा के बेटे (अबूबक्र रज़ि०) हैं?

लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसने फिर सवाल किया, क्या तुममें उमर बिन ख़त्ताब हैं?

लोगों ने इस बार भी कोई जवाब न दिया, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को जवाब देने से मना फ़रमा दिया था।

अबू सुफ़ियान ने इन तीन के सिवा किसी और के बारे में न पूछा, क्योंकि उसे और उसकी क़ौम को मालूम था कि इस्लाम इन्हीं तीनों से क़ायम है। बहरहाल जब कोई जवाब न मिला तो उसने कहा, चलो, इन तीनों से फ़ुर्सत हुई।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० बेक़ाबू हो गए और बोले, ओ अल्लाह के दुश्मन! जिनका तूने नाम लिया है, वे सब ज़िंदा हैं और अल्लाह ने अभी तेरी रुसवाई का सामान बाक़ी रखा है।

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम्हारे क़त्ल किए गए लोगों का मुसला हुआ है, लेकिन मैंने न उसका हुक्म दिया है, और न उसका बुरा मनाया है। फिर नारा लगाया, 'हुबल बुलन्द हो।'

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम लोग जवाब क्यों नहीं देते?

सहाबा ने अर्ज़ किया, क्या जवाब दें?

आपने फ़रमाया, कहो 'अल्लाह बुलन्द व बरतर है।'

फिर अबू सुफ़ियान ने नारा लगाया, 'हमारे लिए उज़्ज़ा है और तुम्हारे लिए उज़्ज़ा नहीं।'

---

1. अस्सीरतुल हलबीया 2/30
2. इब्ने हिशाम 2/87

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जवाब क्यों नहीं देते ?

सहाबा ने पूछा, क्या जवाब दें ?

आपने फ़रमाया, कहो, 'अल्लाह हमारा मौला है, और तुम्हारा कोई मौला नहीं ।'

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, कितना अच्छा कारनामा रहा। आज का दिन बद्र की लड़ाई के दिन का बदला है और लड़ाई डोल है ।[1]

हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में कहा, बराबर नहीं। हमारे मारे गए लोग जन्नत में हैं और तुम्हारे मारे गए लोग जहन्नम में।

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, उमर ! मेरे क़रीब आओ।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जाओ, देखो, क्या कहता है ?

वह क़रीब आए, तो अबू सुफ़ियान ने कहा, उमर ! मैं ख़ुदा का वास्ता देकर पूछता हूं क्या हमने मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दिया है ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! नहीं। बल्कि इस वक़्त वह तुम्हारी बातें सुन रहे हैं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम मेरे नज़दीक इब्ने क़ुम्मा से ज़्यादा सच्चे हो ।[2]

बद्र में एक और लड़ाई का वायदा

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अबू सुफ़ियान और उसके साथी वापस होने लगे, तो अबू सुफ़ियान ने कहा, अगले साल बद्र में लड़ने का इरादा है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एक सहाबी से फ़रमाया, कह दो, ठीक है। अब यह बात हमारे और तुम्हारे दर्मियान तै हो गई ।[3]

मुश्रिकों के विचारों की जांच

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को रवाना किया और फ़रमाया, क़ौम के पीछे-पीछे जाओ और देखो वे क्या कर रहे हैं? और उनका इरादा क्या है? अगर उन्होंने घोड़े पहलू में रखे हों और ऊंटों पर सवार हों और ऊंट हांक कर ले

---

1. यानी कभी एक फ़रीक़ ग़ालिब आता है और कभी दूसरा, जैसे डोल कभी कोई खींचता है, कभी कोई।
2. इब्ने हिशाम 2/93, 94, ज़ादुल मआद 2/94, सहीह बुख़ारी 2/579
3. इब्ने हिशाम 2/94

जाएं तो मदीने का इरादा है। फिर फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम ! जिसके हाथ में मेरी जान है ! अगर उन्होंने मदीने का इरादा किया, तो मैं मदीना में जाकर उनसे दो-दो हाथ करूंगा।

हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि इसके बाद मैं उनके पीछे निकला तो देखा, उन्होंने घोड़े पहलू में कर रखे हैं, ऊंटों पर सवार हैं और मक्के का रुख़ है।[1]

शहीदों और घायलों की देखभाल

क़ुरैश की वापसी के बाद मुसलमान अपने शहीदों और घायलों की खोज-ख़बर लेने के लिए निकले।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि उहुद के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे भेजा कि मैं साद बिन रुबीअ को खोजूं और फ़रमाया कि अगर वह दिखाई पड़ जाएं, तो उन्हें मेरा सलाम कहना और यह कहना कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मालूम कर रहे हैं कि तुम अपने आपको कैसा पा रहे हो ?

हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि मैं शहीदों के दर्मियान चक्कर लगाते हुए उनके पास पहुंचा तो उनकी आख़िरी सांस आ-जा रही थी। उन्हें नेज़े, तलवार और तीर के सत्तर से ज़्यादा घाव आए थे। मैंने कहा, ऐ साद ! अल्लाह के रसूल सल्ल० आपको सलाम कहते हैं और मालूम करना चाहते हैं कि बताओ, अब आप अपने को कैसा पा रहे हो ?

उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल० को सलाम। आपसे अर्ज़ करो कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जन्नत की ख़ुशबू पा रहा हूं और मेरी क़ौम अंसार से कहो कि अगर तुममें से किसी की एक आंख भी हिलती रही और दुश्मन अल्लाह के रसूल सल्ल० तक पहुंच गया, तो तुम्हारे लिए अल्लाह के नज़दीक कोई उज्र न होगा और उसी वक़्त उनकी रूह जिस्म से जुदा हो गई।[2]

लोगों ने घायलों में उसैरिम को भी पाया, जिनका नाम अम्र बिन साबित था। इनमें थोड़ी-सी जान बाक़ी थी। इससे पहले उन्हें इस्लाम की दावत दी जाती थी, मगर वह क़ुबूल नहीं फ़रमाते थे, इसलिए लोगों ने (आश्चर्य के साथ) कहा कि

---

1. इब्ने हिशाम, 2/94। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुल बारी (7/347) में लिखा है कि मुश्रिकों के इरादों का पता लगाने के लिए हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले गए थे।
2. ज़ादुल मआद, 2/96

यह उसैरिम कैसे आया है? उसे तो हमने इस हालत में छोड़ा था कि वह दीन का इंकारी था। चुनांचे उनसे पूछा गया कि तुम्हें यहां क्या चीज़ ले आई? क़ौम का साथ देने का जोश या इस्लाम से चाव?

उन्होंने कहा, इस्लाम से चाव। सच तो यह है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर ईमान ले आया और उसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० की हिमायत में लड़ाई में शरीक हुआ, यहां तक कि अब इस हालत से दोचार हूं जो आप लोगों की आंखों के सामने है और उसी वक़्त उनकी जान निकल गई।

लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से इसका ज़िक्र किया, तो आपने फ़रमाया, वह जन्नतियों में से है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं, जबकि उसने अल्लाह के लिए एक वक़्त की भी नमाज़ नहीं पढ़ी थी।[1] (क्योंकि इस्लाम लाने के बाद अभी किसी नमाज़ का वक़्त आया ही न था कि शहीद हो गए।)

इन्हीं घायलों में क़ुज़मान भी मिला। उसने इस लड़ाई में बड़ी वीरता दिखाई थी और अकेले सात या आठ मुश्रिकों को क़त्ल किया था। वह जब मिला तो घावों से चूर था। लोग उसे उठा कर बनू ज़ुफ़र के मुहल्ले में ले गए तो मुसलमानों ने ख़ुशख़बरी सुनाई।

कहने लगा, अल्लाह की क़सम! मेरी लड़ाई तो सिर्फ़ अपनी क़ौम की नाक के लिए थी। अगर यह बात न होती, तो मैं लड़ता ही नहीं। इसके बाद जब उसके घावों में और उभार आया तो उसने अपने आपको ज़िब्ह करके आत्महत्या कर ली।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जब भी उसका ज़िक्र किया जाता तो फ़रमाते, वह जहन्नमी है।[2] (और इस घटना ने आपकी भविष्यवाणी पर मुहर लगा दी) सच तो यह है कि अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के बजाए क़ौम या किसी भी दूसरी राह में लड़ने वालों का अंजाम यही है, चाहे वे इस्लाम के झंडे तले, बल्कि रसूल सल्ल० और सहाबा की फ़ौज में शरीक होकर क्यों न लड़ रहे हों।

इसके बिल्कुल विपरीत मारे जाने वालों में बनू सालबा का एक यहूदी था। उसने उस वक़्त जबकि लड़ाई के बादल उमड़-घुमड़कर आ रहे थे, अपनी क़ौम से कहा, ऐ यहूदियो! ख़ुदा की क़मस, तुम जानते हो कि मुहम्मद (सल्ल०) की मदद तुम पर फ़र्ज़ है।

---

1. ज़ादुल मआद 2/94, इब्ने हिशाम 2/90
2. ज़ादुल मआद 2/97, 98, इब्ने हिशाम 2/88

यहूदियों ने कहा, मगर आज सब्त (शनिवार) का दिन है।

उसने कहा, तुम्हारे लिए कोई सब्त नहीं। फिर उसने अपनी तलवार ली, साज़ व सामान उठाया और बोला, अगर मैं मारा जाऊं तो मेरा माल मुहम्मद के लिए है, वह उसमें जो चाहेंगे, करेंगे। इसके बाद लड़ाई के मैदान में गया और लड़ते-भिड़ते मारा गया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, मुख़ैरीक़ बेहतरीन यहूदी था।[1]

शहीदों को जमा करके दफ़्न किया गया

इस मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ुद भी शहीदों का मुआयना किया और फ़रमाया कि मैं इन लोगों के हक़ में गवाह रहूंगा। सच तो यह है कि जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में घायल किया जाता है, उसे अल्लाह क़ियामत के दिन इस हालत में उठाएगा कि उसके घाव से ख़ून बह रहा होगा। रंग तो ख़ून ही का होगा, लेकिन ख़ुशबू मुश्क की ख़ुशबू होगी।[2]

कुछ सहाबा ने अपने शहीदों को मदीना पहुंचा दिया था। आपने उन्हें हुक्म दिया कि अपने शहीदों को वापस लाकर उनकी शहादतगाहों में दफ़्न करें। साथ ही शहीदों के हथियार और पोस्तीन के पहनावे उतार लिए जाएं, फिर उन्हें नहलाए बिना जिस हालत में हों, उसी हालत में दफ़्न कर दिया जाए।

आप दो-दो तीन-तीन शहीदों को एक-एक क़ब्र में दफ़ना रहे थे और दो-दो आदमियों को एक ही कपड़े में इकट्ठा लपेट देते थे और मालूम करते थे कि इनमें से किसको क़ुरआन ज़्यादा याद है? लोग जिस ओर इशारा करते उसे क़ब्र में आगे करते और फ़रमाते कि मैं क़ियामत के दिन इन लोगों के बारे में गवाही दूंगा।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम और अम्र बिन जमूह एक ही क़ब्र में दफ़्न किए गए, क्योंकि इन दोनों में दोस्ती थी।[3]

हज़रत हंज़ला की लाश ग़ायब थी। खोजने के बाद एक जगह इस हालत में मिली कि ज़मीन से ऊपर थी और उससे पानी टपक रहा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को बताया कि फ़रिश्ते उन्हें ग़ुस्ल दे

---

1. इब्ने हिशाम 2/88, 89
2. वही, 2/98
3. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 3/248, हदीस न० 1343, 1346, 1347, 1348, 1353, 4079, सहीह बुख़ारी 2/584

रहे हैं। फिर फ़रमाया, उनकी बीवी से पूछो, क्या मामला है?

उनकी बीवी से मालूम किया गया, तो उन्होंने वाक़िया बतलाया। यहीं से हज़रत हंज़ला का नाम 'ग़सीलुल मलाइका' (फ़रिश्तों के ग़ुस्ल दिए हुए) पड़ गया।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत हमज़ा का हाल देखा तो बड़े दुखी हुए। आपकी फूफी हज़रत सफ़िया रज़ि० तशरीफ़ लाईं, वह भी अपने भाई हज़रत हमज़ा रज़ि० को देखना चाहती थीं, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बेटे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से कहा कि उन्हें वापस ले जाएं, वह अपने भाई का हाल देख न लें।

मगर हज़रत सफिया ने कहा, आख़िर ऐसा क्यों? मुझे मालूम हो चुका है कि मेरे भाई का मुस्ला किया गया है, लेकिन यह अल्लाह की राह में है, इसलिए जो कुछ हुआ, हम उस पर पूरी तरह राज़ी हैं। मैं सवाब समझते हुए इनशाअल्लाह ज़रूर सब्र करूंगी।

इसके बाद वह हज़रत हमज़ा रज़ि० के पास आईं, उन्हें देखा, उनके लिए दुआ की। इन्ना लिल्लाहि पढ़ी और अल्लाह से माफ़ी की दुआ की। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुक्म दिया कि उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश के साथ दफ़न कर दिया जाए। वह हज़रत हमज़ा के भांजे थे और दूध शरीक भाई भी।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब पर जिस तरह रोए, उससे बढ़कर रोते हुए हमने आपको कभी नहीं देखा। आपने उन्हें क़िब्ले की ओर रखा, फिर उनके जनाज़े पर खड़े हुए और इस तरह रोए कि आवाज़ बुलन्द हो गई।[2]

वास्तव में शहीदों का दृश्य था ही बड़ा हृदय विदारक और हिला देने वाला। चुनांचे हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त का बयान है कि हज़रत हमज़ा के लिए एक काली धारियों वाली चादर के सिवा कोई कफ़न न मिल सका। यह चादर सर पर डाली जाती तो पांव खुल जाते और पांव पर डाली जाती तो सर खुल जाता, आख़िरकार चादर से सर ढक दिया गया और पांव पर इज़ख़र[3] घास डाल

---

1. ज़ादुल मआद 2/94
2. यह इब्ने शाज़ान की रिवायत है, देखिए मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 255
3. यह बिल्कुल मूज के शक्ल की एक खुशबूदार घास होती है। बहुत-सी जगहों पर चाय में डाल कर पकाई भी जाती है। अरब में इसका पौधा हाथ-डेढ़ हाथ से ज़्यादा लम्बा

दी गई।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का बयान है कि मुसअब बिन उमैर रज़ि० की शहादत हुई, और वह मुझसे बेहतर थे, तो उन्हें एक चादर के अन्दर कफ़नाया गया। हालत यह थी कि अगर उनका सर ढांका जाता तो पांव खुल जाते और पांव ढांपे जाते तो सर खुल जाता था।

उनकी यही स्थिति हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने भी बयान की है और इतना और बढ़ा दिया है कि (इस स्थिति को देखकर) नबी सल्ल० ने हमसे फ़रमाया कि चादर से उनका सर ढांक दो और पांव पर इज़ख़र डाल दो।[2]

रसूलुल्लाह सल्ल० अल्लाह का गुणगान करते और उससे दुआ करते हैं

इमाम अहमद की रिवायत है कि उहुद के दिन जब मुश्रिक वापस चले गए तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से फ़रमाया, बराबर हो जाओ, ज़रा मैं अपने रब का गुणगान कर लूं। इस हुक्म पर सहाबा किराम ने आपके पीछे सफ़ें बांध लीं और आपने यों फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! तेरी ही सारी प्रशंसाएं हैं। ऐ अल्लाह! तू जिस चीज़ को फैला दे, उसे कोई तंग नहीं कर सकता और जिस चीज़ को तू तंग कर दे, उसे कोई फैला नहीं सकता। जिस व्यक्ति को तू गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और जो चीज़ तू दे दे, उसे कोई रोक नहीं सकता। जिस चीज़ को तू दूर कर दे उसे कोई क़रीब नहीं कर सकता, और जिस चीज़ को तू क़रीब कर दे, उसे कोई दूर नहीं कर सकता। ऐ अल्लाह! हमारे ऊपर अपनी बरकतें, रहमतें, मेहरबानी और रोज़ी फैला दे।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे से बाक़ी रहने वाली नेमत का सवाल करता हूं, जो न टले और न ख़त्म हो। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ग़रीबी में मदद का और ख़ौफ़ में अम्न का सवाल करता हूं। ऐ अल्लाह! जो कुछ तू ने हमें दिया है उसके शर से और जो कुछ नहीं दिया है, उसके भी शर से तेरी पनाह चाहता हूं। ऐ अल्लाह! हमारे नज़दीक ईमान को प्रिय बना दे और उसे हमारे दिलों में ख़ुशनुमा बना दे

नहीं होता, जबकि भारत में एक मीटर से भी लम्बा होता है।

1. मुस्नद अहमद, मिश्कात 1/140
2. सहीह बुख़ारी, 2/579, 584, मय फ़त्हुल बारी 3/170, हदीस न० 1276, 3897, 3913, 3914, 4047, 4082, 6432, 6448

और कुफ़्र, फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को नागवार बना दे और हमें हिदायत पाए हुए लोगों में कर दे। ऐ अल्लाह ! हमें मुसलमान रखते हुए वफ़ात दे और मुसलमान ही रखते हुए ज़िंदा रख और रुसवाई और फ़ित्ने से दो चार किए बग़ैर भले लोगों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह ! तू इन काफ़िरों को मार और इन पर सख़्ती और अज़ाब कर, जो तेरे पैग़म्बरों को झुठलाते और तेरी राह से रोकते हैं। ऐ अल्लाह ! उन काफ़िरों को भी मार जिन्हें किताब दी गई, ऐ सच्चे ख़ुदा।[1]

मदीने की वापसी

शहीदों के दफ़न करने के बाद और अल्लाह के गुणगान और दुआ के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने का रुख़ फ़रमाया। जिस तरह लड़ाई के दौरान सहाबा से मुहब्बत और वीरता की अनोखी घटनाएं घटित हुई थीं, उसी तरह रास्ते में सहाबी औरतों से सच्चाई और जान लगा देने की विचित्र घटनाएं घटीं।

चुनांचे रास्ते में प्यारे नबी सल्ल० की मुलाक़ात हज़रत हमना बिन्त जहश से हुई। उन्हें उनके भाई अब्दुल्लाह बिन जहश की शहादत की ख़बर दी गई। उन्होंने 'इन्ना लिल्लाहि' पढ़ी और मग़्फ़िरत की दुआ की। फिर उनके मामूं हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब की शहादत की ख़बर दी गई। उन्होंने फिर इन्नालिल्लाह पढ़ी और मग़्फ़िरत की दुआ की। इसके बाद इनके शौहर मुसअब बिन उमैर रज़ि० की शहादत की ख़बर दी गई, तो तड़प कर चीख उठीं, और धाड़ें मार-मार कर रोने लगीं।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, औरत का शौहर उसके यहां एक विशेष स्थान रखता है।[2]

इसी तरह आपका गुज़र बनू दीनार की एक महिला के पास से हुआ, जिसके पति, भाई और पिता तीनों शहीद हो चुके थे। जब उन्हें इन लोगों की शहादत की ख़बर दी गई तो कहने लगीं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का क्या हुआ ?

लोगों ने कहा, फ़्लां की मां ! हुज़ूर सल्ल० ख़ैरियत से हैं और अल्लाह का शुक्र है जैसा तुम चाहती हो, वैसे ही हैं।

महिला ने कहा, ज़रा मुझे दिखा दो। मैं भी आपका मुबारक चेहरा देख लूं।

लोगों ने उन्हें इशारे से बताया। जब उनकी नज़र आप पर पड़ी, तो

---

1. बुख़ारी, अदबुल मुफ़रद, मुस्नद अहमद 3/324
2. इब्ने हिशाम 2/98

बे-अख़्तियार पुकार उठीं, 'आपके बाद हर मुसीबत बे-क़ीमत है।'[1]

रास्ते ही में हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मां आपके पास दौड़ती हुई आईं, उस वक़्त हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० अल्लाह के रसूल के घोड़े की लगाम थामे हुए थे। कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरी मां हैं।

आपने फ़रमाया, इन्हें मुबारक हो। इसके बाद उनके स्वागत के लिए रुक गए। जब वह क़रीब आ गईं तो आपने उनके सुपुत्र अम्र बिन मुआज़ की शहादत पर शोक व्यक्त किया और उन्हें तसल्ली दी और सब्र की नसीहत फ़रमाई।

कहने लगीं, जब मैंने आपको देख लिया, तो मेरे लिए हर मुसीबत बे-क़ीमत है।

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उहुद के शहीदों के लिए दुआ फ़रमाई और फ़रमाया, ऐ उम्मे साद ! तुम ख़ुश हो जाओ और शहीदों के घरवालों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके शहीद सब के सब एक साथ जन्नत में हैं और अपने घरवालों के बारे में उन सबकी शफ़ाअत क़ुबूल कर ली गई है।

कहने लगीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उनके छोड़े हुए लोगों के लिए भी दुआ फ़रमा दीजिए।

आपने फ़रमाया, अल्लाह उनके दिलों का ग़म दूर कर, उनकी मुसीबत का बदला दे और बचे हुए लोगों की बेहतरीन देखभाल फ़रमा।[2]

अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीने में

उसी दिन, यानी शनिवार 7 शव्वाल सन् 03 हि० को शाम ही को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुंचे। घर पहुंच कर अपनी तलवार हज़रत फ़ातिमा को दी और फ़रमाया, बेटी ! इसका ख़ून धो दो। ख़ुदा की क़सम ! यह आज मेरे लिए बहुत सही साबित हुई।

फिर हज़रत अली रज़ि० ने भी तलवार लपकाई और फ़रमाया, इसका भी ख़ून धो दो। अल्लाह की क़सम ! यह भी आज बहुत सही साबित हुई।

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर तुमने बे-लाग लड़ाई लड़ी है, तो तुम्हारे साथ सह्ल बिन हुनैफ़ और अबू दुजाना ने भी बे-लाग लड़ाई लड़ी है।[3]

---

1. इब्ने हिशाम 2/99
2. अस्सीरतुल हलबीया 2/47
3. इब्ने हिशाम 2/100

अधिकतर रिवायतें एक मत हैं कि मुसलमान शहीदों की तायदाद 70 थी, जिनमें बड़ी संख्या अंसार की थी, यानी उनके 65 आदमी शहीद हुए थे, 41 ख़ज़रज से और 24 औस से। एक आदमी यहूदियों में से क़त्ल हुआ था और मुहाजिर शहीदों की तायदाद कुल 4 थी।

बाक़ी रहे कुरैश के मारे गए लोग, तो इब्ने इस्हाक़ के बयान के मुताबिक़ उनकी तायदाद 22 थी, लेकिन लड़ाइयों के माहिर और सीरत लिखने वालों ने इस लड़ाई का जो विवेचन किया है और जिनमें छुट-पुट लड़ाई के अलग-अलग मरहलों में क़त्ल होने वाले मुश्रिकों का उल्लेख किया है, उन पर गहरी नज़र रखते हुए पूरी बारीकी के साथ हिसाब लगाया जाए, तो यह तायदाद 22 नहीं, बल्कि 37 होती है। (ख़ुदा बेहतर जाने।)[1]

मदीने में आपातकाल

मुसलमानों ने उहुद की लड़ाई से वापस आकर (8 शव्वाल 03 हि० शनिवार, रविवार के बीच की) रात आपातकाल में बिताई। लड़ाई ने उन्हें चूर-चूर कर रखा था, इसके बावजूद वे रात भर मदीने के रास्तों और राजमार्गों पर पहरा देते रहे और अपने सेनापति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेष रक्षा पर तैनात रहे, क्योंकि उन्हें हर ओर से शंकाएं थीं।

ग़ज़वा हमरउल असद

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पूरी रात लड़ाई से पैदा हुई स्थिति पर विचार करते हुए गुज़ारी। आपको भय था कि अगर मुश्रिकों ने सोचा कि लड़ाई के मैदान में अपना पल्ला भारी रहते हुए भी हमने कोई लाभ नहीं उठाया तो उन्हें निश्चय ही शर्मिंदगी होगी और वे रास्ते से पलट कर दोबारा मदीना पर हमला करेंगे, इसलिए आपने फ़ैसला किया कि बहरहाल मक्की सेना का पीछा किया जाना चाहिए।

चुनांचे सीरत लिखने वालों का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहुद की लड़ाई के दूसरे दिन यानी रविवार 8 शव्वाल सन् 03 हि० को सुबह सवेरे एलान फ़रमारया कि दुश्मन के मुक़ाबले के लिए चलना है और साथ ही यह भी एलान फ़रमाया कि हमारे साथ सिर्फ़ वही आदमी चल सकता है जो उहुद की लड़ाई में मौजूद था, फिर भी अब्दुल्लाह बिन उबई ने इजाज़त चाही

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 2/122-129, फ़त्हुल बारी 7/351 और ग़ज़वा उहुद, लेखक मुहम्मद अहमद बाशमील पृ० 278, 279, 290

कि आपके साथ चले, मगर आपने इजाज़त न ी।

इधर जितने मुसलमान थे, अगरचे घावों से चूर, ग़म से निढाल और भय और आशंका से दो चार थे, लेकिन बिना किसी संकोच के इताअत का सर झुका दिया।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने भी इजाज़त चाही जो उहुद की लड़ाई में शरीक न थे, सेना में उपस्थित हुए, बोले, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं चाहता हूं कि आप जिस किसी लड़ाई में तशरीफ़ ले जाएं, मैं भी सेवा में लगा रहूं। और चूंकि (इस लड़ाई में) मेरे बाप ने मुझे अपनी बच्चियों की देखभाल के लिए घर पर रोक दिया था, इसलिए आप मुझे इजाज़त दे दें कि मैं भी आपके साथ चलूं। इस पर आपने उन्हें इजाज़त दे दी।

प्रोग्राम के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्ल० मुसलमानों को साथ लेकर चले और मदीने से आठ मील दूर हमरउल असद पहुंचकर पड़ाव डाल दिया।

ठहरने के दौरान माबद बिन अबी माबद ख़ुज़ाई अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गए। और कहा जाता है कि वह अपने शिर्क ही पर क़ायम था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० का भला चाहने वाला था, क्योंकि ख़ुज़ाआ और बनू हाशिम के बीच हलफ़ (यानी दोस्ती का वचन) था।

बहरहाल उसने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०) ! आपको और आपके साथियों को कष्ट पहुंचा है, तो अल्लाह की क़सम ! हमको भी इससे सदमा पहुंचा है। हमारी आरज़ू थी कि अल्लाह आपको सकुशल रखता।

इस तरह सहानुभूति दिखाने पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया कि वह अबू सुफ़ियान के पास जाए और उसका मनोबल गिराए।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो आशंका जताई थी कि मुश्रिक मदीने की ओर पलटने की बात सोचेंगे, वह बिल्कुल सही थी। चुनांचे मुश्रिकों ने मदीने से ३६ मील दूर रौहा नामी जगह पर पहुंचकर जब पड़ाव डाला तो आपस में एक दूसरे को धिक्कारने लगे। कहने लगे, तुम लोगों ने कुछ नहीं किया, उनकी ताक़त तोड़ कर भी उन्हें यों ही छोड़ दिया, हालांकि अभी उनके इतने सर बाक़ी हैं, कि वे तुम्हारे लिए फिर सर दर्द बन सकते हैं, इसलिए वापस चलो और उन्हें जड़ से साफ़ कर दो।

लेकिन ऐसा लगता है कि यह उचटती राय थी, जो उन लोगों की ओर से पेश की गई थी, जिन्हें दोनों फ़रीक़ों की ताक़त और उनके हौसलों का अन्दाज़ा न

था। इसलिए एक ज़िम्मेदार अफ़सर सफ़वान बिन उमैया ने इसका विरोध किया और कहा, लोगो! ऐसा न करो। मुझे ख़तरा है कि जो (मुसलमान उहुद की लड़ाई में) नहीं आए थे, वे भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जमा हो जाएंगे। इसलिए इस हालत में वापस चलो कि जीत तुम्हारी है, वरना मुझे ख़तरा है कि मदीने पर फिर चढ़ाई करोगे, तो चक्कर में पड़ जाओगे, लेकिन भारी संख्या में लोगों ने यह राय क़ुबूल न की और फ़ैसला किया कि मदीना वापस चलेंगे।

लेकिन अभी पड़ाव छोड़कर अबू सुफ़ियान और उसके फ़ौजी हिले भी न थे कि माबद बिन अबी माबद ख़ुज़ाई पहुंच गया। अबू सुफ़ियान को मालूम न था कि वह मुसलमान हो गया है, उसने पूछा, माबद! पीछे की क्या ख़बर है?

माबद ने प्रचार का ज़ोरदार हथकंडा इस्तेमाल करते हुए कहा, मुहम्मद अपने साथियों को लेकर तुम्हारा पीछा करने के लिए निकल चुके हैं। उनकी फ़ौज इतनी बड़ी है कि मैंने ऐसी फ़ौज कभी देखी ही नहीं। सारे लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ ग़ुस्से से कबाब हुए जा रहे हैं। उहुद में पीछे रह जाने वाले भी आ गए हैं। वे जो कुछ बर्बाद कर चुके, उस पर बहुत ज़्यादा शर्मिंदगी है और तुम्हारे ख़िलाफ़ इतने भड़के हुए हैं कि मैंने इसकी मिसाल देखी ही नहीं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, अरे भाई! यह क्या कह रहे हो?

माबद ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरा ख़्याल है कि तुम कूच करने से पहले-पहले घोड़ों की पेशानियां देख लोगे या फ़ौज का आगे का दस्ता इस टीले के पीछे से ज़ाहिर हो जाएगा।

अबू सुफ़ियान ने कहा, ख़ुदा की क़सम! हमने फ़ैसला किया है कि उन पर पलट कर फिर हमला करें और उनकी जड़ काट कर रख दें।

माबद ने कहा, ऐसा न करना, मैं तुम्हारे भले की बात कर रहा हूं।

ये बातें सुनकर मक्की फ़ौज के हौसले टूट गए। उन पर घबराहट और रौब छा गया, और उन्हें इसी में कुशलता नज़र आई कि मक्का की ओर अपनी वापसी जारी रखें। अलबत्ता अबू सुफ़ियान ने इस्लामी फ़ौज का पीछा करने से रोकने और इस तरह दोबारा सशस्त्र टकराव से बचने के प्रोपगंडे का एक जवाबी हमला किया।

शक्ल यह हुई कि अबू सुफ़ियान के पास से क़बीला अब्दुल क़ैस का एक क़ाफ़िला गुज़रा। अबू सुफ़ियान ने कहा, क्या आप लोग मेरा एक पैग़ाम मुहम्मद को पहुंचा देंगे? मेरा वायदा है कि इसके बदले जब आप लोग मक्का आएंगे, तो उकाज़ के बाज़ार में आप लोगों को इतनी किशमिश दूंगा, जितनी आपकी यह

ऊंटनी उठा सकेगी।

उन लोगों ने कहा, जी हां।

अबू सुफ़ियान ने कहा, मुहम्मद को यह ख़बर पहुंचा दें कि हमने उनकी और उनके साथियों की जड़ काट देने के लिए दोबारा पलट कर हमले का फ़ैसला किया है।

इसके बाद जब यह क़ाफ़िला हमरउल असद में रसूलुल्लाह सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० के पास से गुज़रा, तो उनसे अबू सुफ़ियान का पैग़ाम कह सुनाया और कहा कि लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ जमा हैं, उनसे डरो।

मगर उनकी बातें सुनकर मुसलमानों का ईमान और बढ़ गए और उन्होंने कहा, 'हस्बुनल्लाहु व निअमल वकील०' (अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कर्त्ता-धर्त्ता है।) (इस ईमानी ताक़त की बदौलत) वे लोग अल्लाह की नेमत और मेहरबानी के साथ पलटे। उन्हें किसी बुराई ने न छुआ और उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी की पैरवी की और अल्लाह बड़ी मेहरबानियों वाला है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रविवार को हमरउल असद तशरीफ़ ले गए थे। सोमवार, मंगलवार, बुधवार यानी 9, 10, 11 शव्वाल सन् 03 हि० तक वहीं ठहरे रहे। इसके बाद मदीना वापस आए।

मदीना वापसी से पहले अबू अज़्ज़ा जुमही आपकी पकड़ में आ गया। यह वही व्यक्ति है जिसे बद्र में गिरफ़्तार किए जाने के बाद उसके उपवास और लड़कियों की ज़्यादा तायदाद होने की वजह से इस शर्त पर बिना कुछ लिए-दिए छोड़ दिया गया कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़िलाफ़ किसी की मदद नहीं करेगा। लेकिन उस व्यक्ति ने वायदा के ख़िलाफ़ काम किया और अपनी कविताओं द्वारा नबी सल्ल० और सहाबा किराम के ख़िलाफ़ लोगों की भावनाओं को भड़काया (जिसका उल्लेख पीछे पन्नों में किया जा चुका है), फिर मुसलमानों से लड़ने के लिए ख़ुद भी उहुद की लड़ाई में आया।

जब यह गिरफ़्तार करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया, तो कहने लगा, मुहम्मद (सल्ल०)! मेरी ग़लती माफ़ कर दो, मुझ पर एहसान कर दो और मेरी बच्चियों के लिए मुझे छोड़ दो। मैं वचन देता हूं कि अब दोबारा ऐसी हरकत नहीं करूंगा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अब यह नहीं हो सकता कि तुम मक्का जाकर अपने गाल पर हाथ फेरो और कहो कि मैंने मुहम्मद को दो बार धोखा दिया। मोमिन एक बिल से दो बार नहीं डसा जा सकता। इसके बाद

हज़रत ज़ुबैर या हज़रत आसिम बिन साबित को हुक्म दिया और उन्होंने उसकी गरदन मार दी।

इसी तरह मक्के का एक जासूस भी मारा गया। उसका नाम मुआविया बिन मुग़ीरह बिन अबिल आस था और वह अब्दुल मलिक बिन मरवान का नाना था। यह व्यक्ति इस तरह निशाने पर आया कि जब उहुद के दिन मुश्रिक वापस चले गये तो यह अपने चचेरे भाई हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने आया, हज़रत उस्मान ने उसके लिए रसूलुल्लाह सल्ल० से अमान तलब की।

आपने इस शर्त पर अमान दे दी कि अगर वह तीन दिन के बाद पाया गया, तो क़त्ल कर दिया जाएगा, लेकिन जब मदीना इस्लामी फ़ौज से ख़ाली हो गया, तो यह आदमी कुरैश की जासूसी के लिए तीन दिन से ज़्यादा ठहर गया और जब फ़ौज वापस आई तो भागने की कोशिश की। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० और अम्मार बिन यासिर रज़ि० को हुक्म दिया और उन्होंने उस आदमी का पीछा करके उसकी जान ले ली।[1]

ग़ज़वा हमरउल असद का उल्लेख अगरचे एक अलग नाम से किया जाता है, पर सच तो यह है कि यह कोई अलग से ग़ज़वा न था, बल्कि ग़ज़वा उहुद का एक भाग या उसका पूरक था और उसी के पृष्ठों में से एक पृष्ठ था।

उहुद की लड़ाई की हार-जीत का एक विश्लेषण

यह है ग़ज़वा उहुद, अपने तमाम मरहलों और पूरे विवेचन के साथ।

इस ग़ज़वे के अंजाम के बारे में बड़ी लम्बी-चौड़ी बहसें की गई हैं कि क्या इसे मुसलमानों की हार माना जाए या नहीं?

जहां तक तथ्यों का ताल्लुक़ है, तो इसमें शक नहीं कि लड़ाई के दूसरे राउंड में मुश्रिकों को श्रेष्ठता प्राप्त थी और लड़ाई का मैदान उन्हीं के हाथ में था। जानी नुक़्सान भी मुसलमानों का ही ज़्यादा हुआ और बड़े भयानक रूप में हुआ। मुसलमानों का एक गिरोह तो यक़ीनन हार खा कर भागा और लड़ाई की गति

---

1. ग़ज़वा उहुद और ग़ज़वा हमरउल असद का सविस्तार विवरण इब्ने हिशाम 2/60-129, ज़ादुल मआद 2/91-108, फ़त्हुल बारी मय सहीह बुख़ारी 7/345-377, मुख़्तसरुस्सीरः लेख–शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 242-257 से जमा की गई हैं और दूसरी पुस्तकों के हवाले सम्बन्धित जगहों ही पर दे दिए गए हैं।

मक्की सेना के पक्ष में रही, लेकिन इन सबके बावजूद कुछ बातें ऐसी हैं जिनकी बुनियाद पर हम इसे मुश्रिकों की जीत नहीं कह सकते।

एक तो यही बात क़तई तौर पर मालूम है कि मक्की सेना मुसलमानों के कैम्प पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकी थी और मदनी फ़ौज के बड़े हिस्से ने सख़्त उथल-पुथल और अव्यवस्था के बावजूद पलायन नहीं किया था, बल्कि बड़ी वीरता से लड़ते हुए अपने सेनापति के पास जमा हो गया था, साथ ही मुसलमानों का पल्ला इस हद तक नहीं हल्का हुआ था कि मक्की सेना उनका पीछा करती। इसके अलावा कोई एक भी मुसलमान उनकी क़ैद में नहीं गया, न कुफ़्फ़ार ने ग़नीमत का कोई माल हासिल किया।

फिर कुफ़्फ़ार लड़ाई के तीसरे राउंड के लिए तैयार नहीं हुए, हालांकि इस्लामी फ़ौज अभी अपने कैम्प ही में थी।

इसके अलावा कुफ़्फ़ार लड़ाई के मैदान में एक या दो दिन या तीन दिन भी नहीं ठहरे, हालांकि उस ज़माने के विजेताओं का यही चलन था और विजय की यह एक बड़ी ज़रूरी निशानी थी, मगर कुफ़्फ़ार ने बिल्कुल झट-पट वापसी कर ली और मुसलमानों से पहले ही लड़ाई का मैदान ख़ाली कर दिया। उन्हें माल लूटने के लिए मदीने में भी दाख़िल होने की हिम्मत न हुई, हालांकि यह शहर कुछ ही क़दम के फ़ासले पर था और फ़ौज से पूरी तरह ख़ाली और एकदम खुला पड़ा था। रास्ते में कोई रुकावट भी न थी।

इन सारी बातों का सार यह है कि क़ुरैश को ज़्यादा से ज़्यादा सिर्फ़ यह मिला कि उन्होंने एक वक़्ती मौक़े से फ़ायदा उठा कर मुसलमानों को ज़रा कड़ी किस्म की परेशानी में डाल दिया, वरना इस्लामी फ़ौज को घेर लेने के बाद उसे पूरे तौर पर क़त्ल कर देने या क़ैद कर लेने का जो फ़ायदा उन्हें सामरिक दृष्टि से अनिवार्य रूप से होना चाहिए था, उसमें वे फ़ेल हो गए और इस्लामी फ़ौज कुछ बड़ा नुक़्सान उठाने के बावजूद घेरा तोड़कर निकल गई और इस तरह का घाटा तो बहुत ही बार ख़ुद विजेताओं को सहन करना पड़ता है, इसलिए इस मामले को मुश्रिकों की विजय का नाम नहीं दिया जा सकता।

बल्कि वापसी के लिए अबू सुफ़ियान की जल्दी इस बात का पता देती है कि उसे ख़तरा था कि अगर लड़ाई का तीसरा दौर शुरू हो गया तो उसकी फ़ौज बड़ी तबाही और हार से दोचार हो जाएगी। इसकी पुष्टि अबू सुफ़ियान के उस निर्णय से होती है जो उसने ग़ज़वा हमरउल असद के बारे में अपनाया था।

ऐसी स्थिति में हम इस ग़ज़वे को किसी एक फ़रीक़ की विजय और दूसरे की पराजय कहने के बजाए अनिर्णीत लड़ाई कह सकते हैं, जिसमें हर फ़रीक़ ने

सफलता और विफलता से अपना अपना हिस्सा हासिल किया, फिर लड़ाई से मैदान से भागे बिना और अपने कैम्प को दुश्मन के क़ब्ज़े के लिए छोड़े बिना लड़ाई से दामन बचा लिया और अनिर्णीत लड़ाई कहते ही इसी को हैं। यही संकेत अल्लाह के इस इर्शाद से भी निकलता है—

'(मुश्रिक) क़ौम का पीछा करने में ढीले न पड़ो। अगर तुम दुख महसूस कर रहे हो तो तुम्हारी ही तरह वे भी दुख महसूस कर रहे हैं और तुम लोग अल्लाह से उस चीज़ की उम्मीद रखते हो जिसकी वे उम्मीद नहीं रखते।' (4 : 104)

इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट संकेत दिया है कि दोनों फ़रीक़ एक ही जैसी स्थिति में हैं और दोनों फ़रीक़ इस हालत में वापस हुए हैं कि कोई भी विजयी नहीं।

इस ग़ज़वे पर क़ुरआन की समीक्षा

बाद में क़ुरआन मजीद की आयतें उतरीं तो उसमें इस लड़ाई के एक-एक मरहले पर रोशनी डाली गई और समीक्षा करते हुए उन कारणों को बताया गया, जिनके नतीजे में मुसलमानों को उस बड़े नुक़्सान का सामना करना पड़ा था। और बतलाया गया कि इस तरह के निर्णायक अवसरों पर ईमान वाले और यह उम्मत, जिसे दूसरों के मुक़ाबले में ख़ैरे उम्मत होने का दर्जा हासिल है, जिन ऊंचे और अहम मक़्सद के लिए वजूद में लाई गई है, उनके लिहाज़ से अभी ईमान वालों के अलग-अलग ग्रुपों में क्या-क्या कमज़ोरियां रह गई हैं।

इसी तरह क़ुरआन मजीद ने मुनाफ़िक़ों की सोच का उल्लेख करते हुए उनके चेहरे पर से परदा उठाया। उनके सीनों में ख़ुदा और रसूल के ख़िलाफ़ छिपी हुई दुश्मनी स्पष्ट की और भोले-भाले मुसलमानों में इन मुनाफ़िक़ों और इनके भाई यहूदियों ने जो वस्वसे फैला रखे थे, उन्हें दूर किया और उन प्रशंसनीय हिक्मतों और मक़्सदों की ओर इशारा फ़रमाया, जो इस लड़ाई का सार थीं।

इस लड़ाई के बारे में सूरः आले इम्रान की साठ आयतें उतरीं। सबसे पहले लड़ाई के शुरू के मरहले का उल्लेख हुआ। कहा गया—

'याद करो जब अपने घर से निकल कर (उहुद के मैदान में गए और वहां) ईमान वालों को लड़ाई के लिए जगह-जगह तैनात कर रहे थे।' (3 : 121)

फिर आखिर में इस लड़ाई के नतीजों और हिक्मतों पर भरपूर रोशनी डाली गई और कहा गया—

'ऐसा नहीं हो सकता कि अल्लाह ईमान वालों को इसी हालत पर छोड़ दे, जिस पर तुम लोग हो, यहां तक कि गन्दे को पाक से अलग कर दे और ऐसा

नहीं हो सकता कि अल्लाह तुम्हें अनदेखी चीज़ों का पता दे दे, लेकिन वह अपने पैग़म्बरों में से जिसे चाहता है, चुन लेता है। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाए और तक़्वा अपनाया, तो तुम्हारे लिए बड़ा बदला है।' (3 : 179)

ग़ज़वे में काम कर रही अल्लाह की हिक्मतें

अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने इस विषय पर बहुत विस्तार से लिखा है।[1]

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं, उलेमा ने कहा है कि ग़ज़वा उहुद और उसके अन्दर मुसलमानों को पेश आने वाली परेशानी में रब की बड़ी ज़बरदस्त हिक्मतें और फ़ायदे काम कर रहे थे, जैसे मुसलमानों को मुसीबत के बुरे अंजाम और ग़लत काम करने के अंजाम से ख़बरदार करना। क्योंकि तीरंदाज़ों को अपने केन्द्र पर रहने का जो हुक्म अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया था, उन्होंने उसके ख़िलाफ़ काम करते हुए केन्द्र छोड़ दिया था (और इसी वजह से परेशानियों का सामना करना पड़ा था)।

एक हिक्मत पैग़म्बरों की इस सुन्नत को ज़ाहिर करना था कि पहले वे आज़माइश में डाले जाते हैं, फिर आख़िरकार उन्हीं को कामियाबी मिलती है और इसमें यह हिक्मत छिपी हुई है कि उन्हें अगर हमेशा सफलता ही सफलता मिले, तो ईमान वालो की सफ़ों में वे लोग भी घुस आएंगे जो ईमान वाले नहीं हैं। फिर सच्चे और झूठे में अन्तर न किया जा सकेगा और अगर हमेशा हारते ही रहें तो उनके भेजे जाने का मक़्सद ही पूरा न हो सकेगा, इसलिए हिक्मत का तक़ाज़ा यही है कि दोनों शक्लें पेश आएं ताकि सच्चे-झूठे का अन्तर मालूम हो सके।

मुनाफ़िक़ों का निफ़ाक़ मुसलमानों से छिपा हुआ था। जब यह घटना घटी और निफ़ाक़ वालों ने अपनी कथनी-करनी ज़ाहिर कर दी, तो इशारा साफ़ सामने आ गया और मुसलमानों को मालूम हो गया कि ख़ुद उनके अपने घरों में भी उनके दुश्मन मौजूद हैं, इसलिए मुसलमान उनसे निमटने के लिए मुस्तैद और उनकी ओर से सावधान हो गए।

एक हिक्मत यह भी थी कि कहीं-कहीं मदद के आने में देर से विनम्रता पैदा होती है और मन का अहं टूटता है। चुनांचे जब ईमान वाले आज़माइश से दो चार हुए, तो उन्होंने सब्र से काम लिया, अलबत्ता मुनाफ़िक़ों में रोना-पीटना शुरू हो गया।

---

1. देखिए ज़ादुल मआद 2/99-108

एक हिक्मत यह भी थी कि अल्लाह ने ईमान वालों के लिए अपने रुत्बे के घर (यानी जन्नत) में कुछ ऐसे दर्जे तैयार कर रखे हैं जहां तक उनके कामों की पहुंच नहीं होती। इसलिए आज़माइशों की भी कुछ वज्हें तै कर रखी हैं, ताकि उनकी वजह से इन दर्जों तक ईमान वालों की पहुंच हो सके।

एक हिक्मत यह भी थी कि शहादत अल्लाह के औलिया का सबसे ऊंचा दर्जा है, इसलिए यह दर्जा उनके लिए जुटा दिया गया।

एक हिक्मत यह भी थी कि अल्लाह अपने दुश्मनों को हलाक करना चाहता था, इसलिए उनके लिए ऐसी वज्हें जुटा दी गईं, यानी कुफ़्र और ज़ुल्म और अल्लाह के औलिया (प्रिय लोग) को कष्ट पहुंचाने में हद से बढ़ी हुई सरकशी, फिर (उनके इसी काम के नतीजे में) ईमान वालों को गुनाहों से पाक-साफ़ कर दिया और काफ़िरों को हलाक व बर्बाद कर दिया।[1]

---

1. फ़त्हुल बारी 7/347